

02 कालभैरव ही है कालराज

06 भारत में स्कूल शिक्षा के लिए 2025 का दृष्टिकोण

08 रांची राजभवन का नाम बिरसा भवन नामित हो: राधाकृष्ण किशोर, संसदीय मंत्री

ऑटो-ई रिक्शा चालकों को सख्त चेतावनी: नियम तोड़ने पर होगी कड़ी कार्रवाई

दिल्ली भारत देश की राजधानी में कब करेंगे चालकों को यातायात नियमों का पालन करने और अनुशासन बनाए रखने के सख्त निर्देश, बड़ा सवाल ?

संजय बाटला

संभागीय परिवहन कार्यालय में ऑटो एवं ई-रिक्शा यूनियन के पदाधिकारियों के साथ बैठक में परिवहन अधिकारियों ने चालकों को यातायात नियमों का पालन करने और अनुशासन बनाए रखने के सख्त निर्देश दिए।

बैठक में अधिकारियों ने कहा कि वाहन चालकों को ओवरस्पीडिंग, ओवरचार्जिंग और ओवरलोडिंग से बचना होगा, निर्धारित

किराया वसूल करना होगा, वाहन चालकों के लिए निर्धारित वर्दी पहनना अनिवार्य है और शराब या नशे के प्रभाव में वाहन नहीं चलाना होगा। रात में वाहन की लाइट जलाना और वाहनों के पीछे रिफ्लेक्टिव टेप लगाना भी जरूरी है।

साथ ही सभी वाहनों के प्रप्रज, फिटनेस, टैक्स, इंश्योरेंस, पोल्यूरेशन और परमिट वैध रखने तथा केवल लाइसेंसधारी चालक द्वारा वाहन संचालित करने पर जोर दिया गया।

अधिकारियों ने चेताया कि नियमों का उल्लंघन करने पर नियमानुसार कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

यूनियन पदाधिकारियों ने विभागीय निर्देशों का पालन सुनिश्चित करने का आश्वासन दिया।

परिवहन विभाग के अधिकारियों ने सभी चालकों से यातायात नियमों का पालन कर सड़क दुर्घटनाओं की संभावनाओं को कम करने की अपील भी की।



दूरी से परे रहने वाले रिश्ते



पिंकी कुंडू

संकेत:

- वे दूर हों तब भी उनकी उपस्थिति महसूस होती है।
- विचार एक जैसे हो जाते हैं — आप उन्हें सोचते ही हैं और तभी उनका संदेश आ जाता है।
- उनकी याद से ऊर्जा बढ़ती है — जैसे कोई सुकून देने वाली रोशनी।
- उनके साथ चुप्पी भी सुरक्षित लगती है।
- दूरी बाँध को कम नहीं करती — बल्कि भरोसा और धैर्य सिखाती है।
- रास्ते बार-बार मिलते हैं, जैसे ब्रह्मांड आपको फिर जोड़ देता है।
- उनके कारण आध्यात्मिक



विकास होता है — जैसे वे स्पष्टता, उपचार या दिशा लेकर आए हों।

8. एक आंतरिक मार्गदर्शन महसूस होता है, जैसे यह संबंध किसी बड़ी योजना का हिस्सा हो।

आत्मिक संबंध अधिकार नहीं, बल्कि पहचान है — दो हृदयों की पहचान जो शायद इस जीवन से पहले भी एक-दूसरे को जानते थे।

राष्ट्रीय ड्राइवर संयुक्त मोर्चा समिति द्वारा ड्राइवर आह्वान

संजय बाटला

24 करोड़ चालकों की आवाज — 6300 संगठनों की एकजुट ताकत, चलो दिल्ली — 22-23 मार्च 2026

आज वक्त आ गया है कि 24 करोड़ चालक समाज अपनी शक्ति का एहसास कराए।

देश के हर कोने में काम करने वाला चालक चाहे ऑटो, टैक्सी, ट्रक, बस, ई-रिक्शा, बाइक टैक्सी या किसी भी वाहन से जीवन चला रहा हो — अब एक आवाज को अब अनसुना नहीं किया जा सकता! 6300 संगठनों की ताकत पहली बार एक साथ, एक मंच पर, एक उद्देश्य के लिए — अपने अधिकार,

सम्मान और सुरक्षा के लिए खड़ी हो रही है।

चलो दिल्ली का मतलब सिर्फ प्रदर्शन नहीं आंदोलन है सम्मान का!

- यह लड़ाई है सामाजिक सुरक्षा की।
- यह मांग है न्यूनतम आय की गारंटी की।
- यह प्रयास है इंश्योरेंस, पेंशन और सुरक्षा कानूनों के लिए।

यह आवाज है ड्राइवरों को देश के असली सहयोगी के रूप में पहचान दिलाने की।

- हम सड़कें चलाते हैं
- हम शहरों को जीवंत रखते हैं
- हम देश की अर्थव्यवस्था को गति देते हैं
- अब अपना अधिकार भी खुद ही लेकर आएं।

22-23 मार्च 2026 — दिल्ली

बुलारही है हर राज्य से, हर जिले से, हर संगठन से हजारों नहीं — लाखों चालक दिल्ली की धरती पर एक साथ जुड़ेंगे। यह दिन इतिहास बनाएगा — क्योंकि ड्राइवर समाज की एकता आज तक इतनी बड़ी और संगठित कभी नहीं रही।

साथियों, उठो — एकजुट हो जाओ! 24 करोड़ की ताकत जब खड़ी हो जाए

तो कोई भी हमारी आवाज को दबा नहीं सकता। जब 6300 संगठन एक साथ बोलें

तो कोई भी सरकार हमारी बात को नजरअंदाज नहीं कर सकती।

चलो दिल्ली — सम्मान का आंदोलन, अधिकार की लड़ाई, एकता का संदेश

22-23 मार्च 2026 | दिल्ली, संगठित भारत का सबसे बड़ा चालक आंदोलन



समाचार पत्रों में फर्जी क्लीनिको की खबर प्रकाशित होने पर स्वास्थ्य विभाग बदायूं की टीम ने की ताबड़तोड़ छापेमारी

परिवहन विशेष न्यूज

बदायूं: जगत ब्लॉक क्षेत्र में उपरोक्त विषयक शिक्षायात कर्ता सुखवीर सिंह पुत्र होमेश सिंह निवासी ग्राम पडौलिया ब्लाक जगत के द्वारा दिनांक 27 नवंबर 2025 को अपरिचित चिकित्सक संजीव कुमार के विरुद्ध अवैध रूप से क्लीनिक संचालन करने की शिकायत की गयी थी। जिसके संबंध में मुख्य चिकित्सा अधिकारी की टीम के नोडल अधिकारी पंजीकृत चिकित्सा डॉ नवनीत कुमार जिंटी सी.एम. ओ. एवं बाबू नितिन कुमार ने अवात करया है कि अधोहस्ताक्षरी के द्वारा दिनांक 10

दिसंबर 2025 को उक्त स्थल का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान झोलाछाप डॉक्टर संजीव कुमार के विरुद्ध अवैध रूप से क्लीनिक संचालित करते हुये मौके पर पाये गये। अधोहस्ताक्षरी के द्वारा उनसे वैध चिकित्सकीय प्रमाण पत्र दिखाने हेतु कहा गया परंतु उनके द्वारा किसी भी प्रकार का चिकित्सकीय प्रमाण पत्र उपलब्ध नहीं कराया गया। अधोहस्ताक्षरी के द्वारा मौके पर क्लीनिक को सील कर दिया गया एवं नोटिस के माध्यम से 11 दिसंबर 2025 तक वांछित प्रमाण पत्र कार्यालय में प्रस्तुत करने हेतु दिया गया है।

इधर थाना बिनावर क्षेत्र में राधा बल्लभ क्लीनिक मलगाँव के विरुद्ध समाचार पत्र में प्रकाशित खबर को संज्ञान लेते हुये अधोहस्ताक्षरी के द्वारा श्री राधा बल्लभ क्लीनिक मलगाँव का औचक निरीक्षण किया गया था। जिसमें निरीक्षण के दौरान क्लीनिक मौके पर बंद पाया गया अधोहस्ताक्षरी के द्वारा उक्त क्लीनिक पर नोटिस चर्षा करते हुये से दिनांक 11 दिसंबर 2025 तक वांछित प्रमाण पत्र कार्यालय में प्रस्तुत करने हेतु निर्देशित किया गया है। सम्बन्धित के द्वारा वांछित प्रमाण पत्र प्रस्तुत न करने पर उनके विरुद्ध अग्रिम कार्यवाही की जायेगी।



मोदी मॉडल का नया अध्याय: संकट में अक्सर, पान मसाले से सुरक्षा

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

कोविड-19 के गहरे जख्मों से दुनिया अभी भी पूरी तरह नहीं उबर पाई है, लेकिन इसी दौर में नरेंद्र मोदी सरकार ने एक ऐसा ऐतिहासिक फैसला लिया है जिसने साबित कर दिया कि भारत अब सिर्फ परिस्थितियों का जवाब नहीं देता — बल्कि आने वाले समय की दिशा तय करता है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा 1 दिसंबर 2025 को लोकसभा में पेश किया गया 'स्वास्थ्य सुरक्षा से राष्ट्रीय सुरक्षा सेस विधेयक, 2025' इसी दूरदर्शी सोच का सशक्त उदाहरण है। यह विधेयक किसी सामान्य कर सुधार से कहीं अधिक है; यह एक रणनीतिक बदलाव है, जो स्वास्थ्य को राष्ट्रीय सुरक्षा का चौथा स्तंभ घोषित करता है।

पान मसाला जैसे हानिकारक उत्पादों पर 40 प्रतिशत क्षमता-आधारित सेस लागू करके सरकार हर वर्ष करीब छह हजार करोड़ रुपये का एक विशेष कोष तैयार करेगी — एक ऐसा कोष, जो प्रत्यक्ष रूप से महामारी-निर्ग्रहण, 'वन हेल्थ' मिशन, वैक्सीन उत्पादन और रक्षा-आधुनिकीकरण जैसी अत्यंत महत्वपूर्ण राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को सशक्त बनाने में खर्च होगा। यही है मोदी सरकार की नीतिगत सोच का असली दर्शन — 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' की जीवंत अभिव्यक्ति — जहाँ समाज को हानि पहुँचाने वाले उत्पादों से प्राप्त कर का उपयोग उन क्षेत्रों को मजबूत करने में किया जाता है, जो राष्ट्र को दीर्घकाल में अधिक सुरक्षित, समर्थ और आत्मनिर्भर बनाते हैं।

मोदी सरकार की सबसे बड़ी शक्ति यही है कि वह हर छोटे-बड़े संकट को भी एक व्यापक राष्ट्रीय अवसर में बदल देने की अद्भुत क्षमता रखती है। कोविड की

भयावहता और वैश्विक अराजकता के बीच जब पूरी दुनिया वैक्सीन के लिए बेचैन और असहाय खड़ी थी, तब भारत ने न केवल स्वयं की सुरक्षा सुनिश्चित की बल्कि 200 से अधिक देशों तक जीवनरक्षक टीके पहुँचाकर अपनी मानवीय नेतृत्व-भूमिका को सिद्ध किया। आज वही सरकार उस अमूल्य ऐतिहासिक अनुभव को एक स्थायी, संस्थागत और भविष्य-निर्माण करने वाली संरचना में परिवर्तित कर रही है। यह नया फंड भारत को 'फ्यूचर-रेडी' बनाने की दिशा में उठाया गया सबसे निर्णायक और दूरदर्शी कदम है।

जूनैतिक रोगों की सतत निगरानी, प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियाँ, बायोसेफ्टी लेवल-3 लेब्स का नेटवर्क, और वन हेल्थ मिशन के तहत पशु-मानव-पर्यावरण का समन्वित ढांचा — इन सभी रणनीतिक क्षमताओं को अब स्थायी वित्तीय समर्थन मिलेगा, जिससे इनकी गति कई गुना बढ़ेगी। भारत अब इतनी मजबूत तैयारी कर रहा है कि कोई भी आने वाली महामारी हमें पहले जैसा नुकसान नहीं पहुँचा सकेगी। यह वास्तव में आत्मनिर्भर भारत का स्वास्थ्य संस्करण है — जहाँ हम केवल अपने नागरिकों की सुरक्षा ही नहीं, बल्कि पूरे वैश्विक दक्षिण के लिए एक मार्गदर्शक मॉडल के रूप में उभर रहे हैं।

सबसे प्रशंसनीय है सरकार का यह नैतिक साहस। पान मसाला और गुटखा जैसे हानिकारक उत्पादों को 'डिमेरिट गुड्स' मानकर उनसे ही स्वास्थ्य फंड में जुटाने का निर्णय सचमुच एक साहसिक और दूरदर्शी कदम है। यही वही नीति-दृष्टि है जिसने स्वच्छ भारत में प्लास्टिक सेस से स्वच्छता कोष बनाया और पेट्रोल-डीजल पर सेस से आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर



खड़ा किया। आम आदमी पर एक पैसा अतिरिक्त बोझ नहीं, फिर भी हर साल अरबों रुपये का स्थायी फंड — यही है मोदी सरकार की 'लक्ष्मी मॉडल' अर्थव्यवस्था, जहाँ पाप से पुण्य का धन निकाला जाता है। विपक्ष जितना भी शोर करे, तथ्य स्पष्ट है — यूपीए के समय सेस निकासी का 7% था, आज 6.1% है; अर्थात् कम सेस में अधिक काम, यही सरकार की असली दक्षता है।

राष्ट्रीय सुरक्षा के मोर्चे पर यह विधेयक भी एक वास्तविक 'मिम-चेजर' है। निर्मला सीतारमण ने कारगिल की याद नगिरकों की सुरक्षा की कमी ने कभी सेना को कमजोर नहीं किया। आज जब युद्ध साइबर, अंतरिक्ष और बायोलॉजिकल हो चुके हैं, स्वास्थ्य सुरक्षा ही रक्षा की पहली और निर्णायक पंक्ति बन चुकी है। इस फंड से ड्रोन-आधारित महामारी निगरानी, सीमा क्षेत्रों में अत्याधुनिक बायोसेफ्टी यूनिट्स और जैव-हथियारों से सुरक्षा की नई तकनीकें विकसित होंगी। ऑपरेशन सिंदूर जैसे मिशनों ने स्पष्ट कर दिया कि स्वास्थ्य और रक्षा अब अलग नहीं रह सकते। मोदी

सरकार ने इसे समझते हुए दुनिया के सामने नया सिद्धांत पेश किया है — 'हेल्थ इज द न्यू डिफेंस'।

राज्यों के साथ सहकारी संघवाद भी पूर्ण रूप से चरित्रार्थ हो रहा है। सेस का 41 प्रतिशत हिस्सा सीधे राज्यों को जाएगा, जिससे केरल हो या उत्तर प्रदेश, हर राज्य अपनी स्थानीय महामारी तैयारी और स्वास्थ्य सुरक्षा को मजबूती से सुदृढ़ कर सकेगा। यह वही मोदी मॉडल है जिसने जीएसटी में राज्यों को रिकॉर्ड स्तर का मुआवजा देकर उनका विश्वास जीता था। आज, जब जीएसटी मुआवजा धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है, तब सरकार ने बिना किसी राज्य को नुकसान पहुँचाए एक नया, स्थायी और भरोसेमंद संसाधन की रक्षा करने की क्षमता भी रखता है।

सबसे महत्वपूर्ण और निर्णायक तथ्य यह है कि 'स्वास्थ्य सुरक्षा से राष्ट्रीय सुरक्षा सेस विधेयक, 2025' मोदी सरकार का एक और प्रेरक मास्टरस्ट्रोक है। यह केवल एक कानून नहीं, बल्कि 2047 के विकसित, सुरक्षित और आत्मनिर्भर भारत की मजबूत नींव है — जहाँ कोई वायसराय अर्थव्यवस्था को डगमगा नहीं सकेगा, और कोई जैव-हमला देश को कमजोर नहीं कर पाएगा। यह वही भारत है जो न केवल अपनी सुरक्षा करता है, बल्कि वैश्विक मानवता ही रक्षा की पहली और निर्णायक पंक्ति बन चुका है।

नरेंद्र मोदी और निर्मला सीतारमण को नमन, जिन्होंने पान मसाले की छोटी पुड़िया से भी महामारी सुरक्षा का कण तैयार कर दिखाया। यही असली 'भारत' की ताकत है — संकट में समाधान, आलोचना में आगे बढ़ना, और हमेशा जनहित को सर्वोपरि रखना।

बाल संरक्षण से उज्ज्वल भविष्य तक: क्यों जरूरी है यूनिसेफ दिवस

सुनील कुमार महला

11 दिसंबर को 'यूनिसेफ स्थानांतरित दिवस' के रूप में मनाया जाता है। 'यूनिसेफ' शब्द 'यूनाइटेड नेशंस चिल्ड्रन फंड' यानी कि 'संयुक्त राष्ट्र बाल कोष'। पाठकों को बताता हूँ कि यूनिसेफ एक अंतरराष्ट्रीय संगठन है, जो बच्चों के अधिकारों, कल्याण, विकास एवं सुरक्षा के लिए काम करता है तथा इसकी स्थापना 1946 में हुई थी। यह दिवस संयुक्त राष्ट्र (यूएन) द्वारा द्वितीय विश्व युद्ध के बाद बच्चों की तबाही, उर्ध्व कृपणों से बच्चे, अत्याचारों के बच्चों को रक्षा करने, स्वास्थ्य और शिक्षा आदि की सुनिश्चित करने के लिए स्थापित किया गया था। प्रारंभ में इसे बच्चों की आत्मकतन्त्रिण बट्ट के लिए स्थापित किया गया था, लेकिन बाद में इसका कार्यक्षेत्र बच्चों के दीर्घकालीन विकास, स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा, संरक्षण आदि की ओर विस्तारित हुआ। जिसका उद्देश्य बच्चों को रक्षा करने यानी कि युनिसेफ के संघ के साथ-साथ कई अंतरराष्ट्रीय संगठनों, कर्षी और साझेदारियों के जरिये दुनिया भर में बच्चों के अधिकारों और मानकों के लिए प्रवर्धन प्रकल्पों और कार्यक्रमों को लागू करना है। वास्तव में, यहाँ यह है कि यूनिसेफ का मूल उद्देश्य दुनिया भर के बच्चों की भौतिक (अच्छा भोजन, साफ पानी, सुरक्षित घर, टीकाकरण, शिक्षा, स्वास्थ्य-सर्वादि) और खराबों से सुरक्षा), सुरक्षा (बच्चे में सकारात्मक सोच का विकास करना तथा बच्चे को मानविक सुरक्षा प्रदान करना) और सामाजिक भावना (समाज में सम्मानजनक स्थान प्रदान करना) पर वस्तुतः ध्यान देना है।

यूनिसेफ ने सत्य तो यह है कि यूनिसेफ का मूल उद्देश्य दुनिया भर के बच्चों की भौतिक (अच्छा भोजन, साफ पानी, सुरक्षित घर, टीकाकरण, शिक्षा, स्वास्थ्य-सर्वादि) और खराबों से सुरक्षा), सुरक्षा (बच्चे में सकारात्मक सोच का विकास करना तथा बच्चे को मानविक सुरक्षा प्रदान करना) और सामाजिक भावना (समाज में सम्मानजनक स्थान प्रदान करना) पर वस्तुतः ध्यान देना है।

यूनिसेफ ने सत्य तो यह है कि यूनिसेफ का मूल उद्देश्य दुनिया भर के बच्चों की भौतिक (अच्छा भोजन, साफ पानी, सुरक्षित घर, टीकाकरण, शिक्षा, स्वास्थ्य-सर्वादि) और खराबों से सुरक्षा), सुरक्षा (बच्चे में सकारात्मक सोच का विकास करना तथा बच्चे को मानविक सुरक्षा प्रदान करना) और सामाजिक भावना (समाज में सम्मानजनक स्थान प्रदान करना) पर वस्तुतः ध्यान देना है।

संके। बरखला, पाठकों को बताता हूँ कि यूनिसेफ दिवस से जुड़ी कई ऐसी खबरें हैं जिन्हें बहुत कम लोग जानते हैं। 1946 में यूनिसेफ की स्थापना वास्तव में एक अस्थायी संगठन के रूप में हुई थी, और इसका उद्देश्य केवल द्वितीय विश्व युद्ध में बुरी तरह प्रभावित यूरोप के बच्चों को भोजन, दवावर्षी और मूलभूत संरचना प्रदान करना था। बाद में जब दुनिया भर में बच्चों की जरूरतें बढ़ती गईं, तो संगठन का स्वरूप भी वैश्विक हो गया और इसके नाम में से 'एयरजेनी' शब्द हटाकर इसे स्थायी, विकास-केंद्रित संस्था के रूप में विस्तारित किया गया। वास्तव में पहले इसका नाम 'इंटरनेशनल चिल्ड्रन एम्प्लोयी फंड' (आइसीएफ) था, लेकिन यूएन इस संस्था का कार्य सिर्फ आगत स्थितियों तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि वैश्विक बच्चों के दीर्घकालीन विकास, स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा, संरक्षण आदि की ओर विस्तारित हुआ। जिसका उद्देश्य बच्चों को रक्षा करने यानी कि युनिसेफ के संघ के साथ-साथ कई अंतरराष्ट्रीय संगठनों, कर्षी और साझेदारियों के जरिये दुनिया भर में बच्चों के अधिकारों और मानकों के लिए प्रवर्धन प्रकल्पों और कार्यक्रमों को लागू करना है। वास्तव में, यहाँ यह है कि यूनिसेफ का मूल उद्देश्य दुनिया भर के बच्चों की भौतिक (अच्छा भोजन, साफ पानी, सुरक्षित घर, टीकाकरण, शिक्षा, स्वास्थ्य-सर्वादि) और खराबों से सुरक्षा), सुरक्षा (बच्चे में सकारात्मक सोच का विकास करना तथा बच्चे को मानविक सुरक्षा प्रदान करना) और सामाजिक भावना (समाज में सम्मानजनक स्थान प्रदान करना) पर वस्तुतः ध्यान देना है।

यूनिसेफ दिवस से जुड़ी कई ऐसी खबरें हैं जिन्हें बहुत कम लोग जानते हैं। 1946 में यूनिसेफ की स्थापना वास्तव में एक अस्थायी संगठन के रूप में हुई थी, और इसका उद्देश्य केवल द्वितीय विश्व युद्ध में बुरी तरह प्रभावित यूरोप के बच्चों को भोजन, दवावर्षी और मूलभूत संरचना प्रदान करना था। बाद में जब दुनिया भर में बच्चों की जरूरतें बढ़ती गईं, तो संगठन का स्वरूप भी वैश्विक हो गया और इसके नाम में से 'एयरजेनी' शब्द हटाकर इसे स्थायी, विकास-केंद्रित संस्था के रूप में विस्तारित किया गया। वास्तव में पहले इसका नाम 'इंटरनेशनल चिल्ड्रन एम्प्लोयी फंड' (आइसीएफ) था, लेकिन यूएन इस संस्था का कार्य सिर्फ आगत स्थितियों तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि वैश्विक बच्चों के दीर्घकालीन विकास, स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा, संरक्षण आदि की ओर विस्तारित हुआ। जिसका उद्देश्य बच्चों को रक्षा करने यानी कि युनिसेफ के संघ के साथ-साथ कई अंतरराष्ट्रीय संगठनों, कर्षी और साझेदारियों के जरिये दुनिया भर में बच्चों के अधिकारों और मानकों के लिए प्रवर्धन प्रकल्पों और कार्यक्रमों को लागू करना है। वास्तव में, यहाँ यह है कि यूनिसेफ का मूल उद्देश्य दुनिया भर के बच्चों की भौतिक (अच्छा भोजन, साफ पानी, सुरक्षित घर, टीकाकरण, शिक्षा, स्वास्थ्य-सर्वादि) और खराबों से सुरक्षा), सुरक्षा (बच्चे में सकारात्मक सोच का विकास करना तथा बच्चे को मानविक सुरक्षा प्रदान करना) और सामाजिक भावना (समाज में सम्मानजनक स्थान प्रदान करना) पर वस्तुतः ध्यान देना है।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

ठंड में कम पानी पीने से होने वाला खतरा – प्रभाव, कारण और हाल की जानकारी

सर्दियों की मौसम में कई लोग पानी कम पीते हैं, और उसका पेट (Gut) तथा दिल (Heart) पर क्या नकारात्मक असर पड़ता है — साथ में ताजा वैज्ञानिक जानकारी और व्यवहारिक सुझाव भी दिए हैं।

1) क्यों सर्दियों में कम पानी पीते हैं?
ठंडी हवा प्यास का संकेत कम कर देती है — इसलिए लोग भूल जाते हैं। ठंडे मौसम में पसीना कम लगता है, इसलिए लोग सोचते हैं कि पानी की जरूरत कम है; परन्तु हवा सूखी होने से त्वचा और श्वसन मार्ग से पानी की कमी होती रहती है।

2) पेट/गट (Gut) पर असर — क्या होता है और क्यों महत्वपूर्ण है?
निर्जलीकरण से आंतों में होम्योस्टेसिस भंग हो सकता है — यानी आंतों का संतुलन बिगड़ता है। पशु-अध्ययन और हाल की रिपोर्टों में पानी की कमी से माइक्रोबायोम का

असंतुलन, इम्यून सेल में कमी और आंतों की जाल-परत (barrier) में परिवर्तन देखे गए हैं। यह कब्ज, गैस, पाचनशक्ति में कमी और सूजन-सम्बंधी समस्याओं को बढ़ा सकता है।

गट माइक्रोबायोम के बदलने से सूजनजन्य संकेत (inflammatory signals) बढ़ सकते हैं, और यह केवल पाचन तक सीमित नहीं रहता — मेटाबोलिज्म और इम्यूनोटी पर भी असर पड़ता है। (माइक्रोबायोम रिसर्च 2024-2025 के सम्मेलनों/रिब्यू से पुष्ट)।

3) दिल (Heart)/सर्कुलेटरी सिस्टम पर असर — क्या होता है और कितना गंभीर हो सकता है?
पानी कम होने पर शरीर का कुल रक्त-परिमाण (blood volume) घटता है — इससे हृदय को अधिक मेहनत करनी पड़ती

है, दिल की धड़कन तेज हो सकती है (tachycardia), और ब्लड प्रेशर अस्थिर हो सकता है। गंभीर निर्जलीकरण में शॉक तक हो सकता है। यह क्लिनिकल गाइडलाइन्स और रिब्यू में विस्तार से वर्णित है।

हल्की-से-मध्यम निर्जलीकरण भी रक्त काचिपचिपापन (viscosity) बढ़ा सकता है, जिससे थ्रोम्बोसिस/रक्त-नालियों पर प्रभाव और कार्डियक स्ट्रेस का खतरा बढ़ता है — विशेषकर जिनको पहले से हृदय रोग है या डायलैटिक जैसी दवाएँ ले रहे हैं।

हाल के अध्ययन बताते हैं कि सर्दियों में भी परिधीय वॉल्यूम (intravascular volume) में कमी आ सकती है — यानी “ठंड में सुरक्षित” नहीं है; सर्दियों में भी कार्डियोवैस्कुलर जोखिम बना रहता है।

4) ताजा (latest) विकास/शोध के मुख्य बिंदु (संक्षेप)

2024-2025 के अध्ययनों ने दिखाया है कि *पानी की कमी सीधे गट होमियोस्टेसिस और माइक्रोबायोम पर असर डालती है* — यह सिर्फ पाचन समस्या नहीं, बल्कि सूजन/इम्यूनोटी और मेटाबोलिक समस्या से जुड़ सकती है।

कार्डियक क्षेत्र में हालिया रिब्यूज ने पारंपरिक तौर पर सुझाए जाने वाली कड़ी fluid restriction (जिसे कुछ हृदय रोगियों के लिए दिया जाता है) की सीमाओं पर प्रकाश डाला है — यानी हर किसी को बहुत सखी से तरल-निषेध (extreme fluid restriction) की सलाह देना वैज्ञानिक रूप से समर्थित नहीं है; मरीज के

clinical context के अनुसार संतुलित दृष्टिकोण चाहिए।

माँसम - आ धारित हाइड्रेशन (seasonal hydration) पर भी शोध बढ़ रहा है — सर्दियों में कुल पानी का सेवन घटने के कारण हाइड्रेशन स्थिति बदलती है और इसे नजरअंदाज करने पर स्वास्थ्य पर नकारात्मक असर दिख रहा है।

5) व्यवहारिक सुझाव — क्या करें (संरक्षित और प्रभावी)

- सुबह उठते ही 1 कप पानी लें — यह

सबसे आसान और असरदार आदत है। (सर्दियों में भी)।

- दिन भर छोटे-छोटे घूंट लेते रहें — प्यास पर ही निर्भर न रहें, क्योंकि सर्दियों में प्यास कम महसूस होती है।
- मूत्र के रंग पर ध्यान दें — साफ/हल्का पीला रंग सामान्य है; गहरा पीला रहे तो पानी बढ़ाएं।
- गर्म सूप, हर्बल टी, छाछ या दही-सहिता पदार्थ (buttermilk), जलयुक्त फल-सब्जियाँ (तरबूज कम; सर्दियों में संतरा, मौसंबी, खीरा आदि) हाइड्रेशन में मदद करते हैं।
- यदि आपको हृदय का पुराना रोग है या दवाएँ (विशेषकर diuretics) ले रहे हैं — तो तरल सेवन का संतुलन डॉक्टर के साथ मिलकर रखें, खुद से तीव्र घटाना/बढ़ाना मत करें। हालिया मार्गदर्शिकाएँ भी इसी संतुलन की सलाह देती हैं।

6) चेतावनी संकेत — कब डॉक्टर से मिलें
चक्कर, तेज दिल की धड़कन, सांस फूलना, बहुत कम मूत्र, भ्रम/बेहोशी — ये तुरन्त चिकित्सा संकेत हैं। निर्जलीकरण तैली से गंभीर बन सकता है, विशेषकर वृद्धों और पहले से रोगियों में।

निष्कर्ष
सर्दियों में पानी कम पीने की आदत को हल्के में न लें। निर्जलीकरण न सिर्फ पेट-सम्बंधी समस्याएँ (गट माइक्रोबायोम असंतुलन, कब्ज, सूजन) बल्कि हृदय पर सीधा दबाव (हृदय-धड़कन, रक्तचाप अस्थिरता, गंभीर मामलों में शॉक) भी डाल सकता है। हालिया शोध गट और कार्डियक दोनों क्षेत्रों में पानी की महत्वपूर्ण रोल को मजबूत कर रहे हैं, और क्लिनिकल प्रैक्टिस में तरल-नीति (fluid policy) अब अधिक व्यक्तिगत और साक्ष्य-आधारित हो रही है।



आयुर्वेद की शक्तिशाली जड़ी: लाजवन्ती से जीवन में स्वास्थ्य के 20 लाभ

लाजवन्ती (छुईं मुई) को आमतौर पर रटच-मी-नॉटर् पौधे के रूप में जाना जाता है। यह आमतौर पर उच्च सजावटी मूल्य के पौधे के रूप में माना जाता है और इसका उपयोग विभिन्न औषधीय प्रयोजनों के लिए भी किया जाता है।

लाजवन्ती अपने एंटीऑक्सीडेंट गुणों के कारण इंसुलिन के स्तर को बढ़ाकर रक्त शर्करा के स्तर को प्रबंधित करने में मदद करती है। यह मूत्र संबंधी समस्याओं के लिए उपयोगी है क्योंकि यह अपने मूत्रवर्धक गुण के कारण मूत्र उत्पादन को बढ़ाता है। लाजवन्ती मिर्गों के इलाज में भी मदद कर सकती है क्योंकि इसमें ऐंठनरोधी गुण होते हैं।

लाजवन्ती के पेस्ट में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट और एंटीमाइक्रोबियल गुणों के कारण घाव जल्दी भरने के लिए आप इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण के कारण यह घावों से संबंधित दर्द और सूजन को कम करने में भी मदद करता है। आयुर्वेद के अनुसार, लाजवन्ती अपने सीता (ठंडा) और कषाय (कसैले) गुणों के कारण बवासीर के प्रबंधन में मदद कर सकती है। लाजवन्ती का पेस्ट माथे पर लगाने से इसके वात संतुलन गुण [2-4] [7] [8] के कारण माइग्रन के दर्द से राहत मिल सकती है।

लाजवन्ती के और नाम क्या है ?
मिमोसा पुडिका, समाम्गा, वारक्रांता, नमस्कार, लज्जुविलाता, अदमलती, लजाका, लज्जवन्ती, स्पश-मी-नॉट, रिसामणी, लाजवन्ती, लजमणि, छुईं मुई, लजीनी, मुक्तिदेसुई, माचिकेगिडा, लजावती, थोड़ा वटी, लजातु, लजाकुरी, लजन, थोड़ावटी, तोतलचुरुंगी, मुदुगुदामारा

कभी पेट फूलने का कारण बनता है। लाजवन्ती अमा को पचाने में मदद करती है और इसके कफ संतुलन गुण के कारण पेटिशर के लक्षणों को कम करती है।

4. एलोपेसिया
एलोपेसिया बालों के झड़ने की स्थिति है जिसमें सिर पर गंजे धब्बे दिखाई देते हैं। आयुर्वेद में इसे खालित्य के नाम से जाना जाता है। खालित्य आमतौर पर असंतुलित पित्त दोष के कारण होता है जो बालों की जड़ों को कमजोर बनाता है और बालों के झड़ने का कारण बनता है। लाजवन्ती पित्त दोष की वृद्धि को रोकने में मदद करती है जो बालों की जड़ों को कमजोर होने से रोकता है, जिससे इसके पित्त संतुलन गुण के कारण अप्रकृतिक बालों का झड़ना कम होता है।

लाजवन्ती के प्रयोग में सावधानियां
स्तनपान
वैज्ञानिक आधुनिक विज्ञान दर्शन चूँकि पर्याप्त वैज्ञानिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं, इसलिए स्तनपान के दौरान लाजवन्ती लेने से पहले चिकित्सक से बचने या परामर्श करने की सलाह दी जाती है।

गर्भावस्था
वैज्ञानिक आधुनिक विज्ञान दर्शन चूँकि पर्याप्त वैज्ञानिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं, इसलिए गर्भावस्था के दौरान लाजवन्ती लेने से पहले किसी चिकित्सक से बचने या परामर्श करने की सलाह दी जाती है।

लाजवन्ती की अनुशंसित खुराक
लाजवन्ती कैप्सूल - प्रतिदिन 1-2 कैप्सूल या चिकित्सक के निर्देशानुसार।
लाजवन्ती का इस्तेमाल कैसे करें
लाजवन्ती कैप्सूल:
1. लाजवन्ती का 1 कैप्सूल लें।
2. इसे खाली पेट पानी के साथ या चिकित्सक के निर्देशानुसार निगल लें।
माइग्रन
माइग्रन एक ऐसी स्थिति है जो पित्त दोष के बढ़ने के कारण होती है। माइग्रन से राहत दिलाने के लिए लाजवन्ती का लेप माथे पर लगाया जाता है, क्योंकि इसमें पित्त को संतुलित करने वाला गुण होता है।
लाजवन्ती का इस्तेमाल कैसे करें
लाजवन्ती का पेस्ट
1. लाजवन्ती के कुछ ताजे पत्ते लें।
2. पत्तों को पीसकर पेस्ट बना लें।
3. स्मूथ पेस्ट बनाने के लिए आप इसमें थोड़ा पानी भी मिला सकते हैं।
4. होलिंग को बढ़ावा देने के लिए इस पेस्ट को घाव या सूजन पर लगाएं।
बार बार पूछे जाने वाले प्रश्न
प्र. लाजवन्ती को कैसे उगाया जा सकता है ?
वैज्ञानिक आधुनिक विज्ञान दर्शन लाजवन्ती को उगाना आसान है। इसकी खेती बीजों के साथ-साथ शाखाओं की कटाई से भी की जा सकती है, लेकिन जड़ वाली कलमों को बार-बार स्थानांतरित करने से पौधे को नुकसान हो सकता है और यह असम में जा सकता है।
Q. लाजवन्ती के पेड़ की उम्र कितनी होती है ?
वैज्ञानिक आधुनिक विज्ञान दर्शन लाजवन्ती के पेड़ की सामान्य आयु लगभग 20 वर्ष होती है।
प्र. मुझे लाजवन्ती के बीज कहाँ से मिल सकते हैं ?
आयुर्वेदिक आयुर्वेदिक दृष्टिकोण आप अपने आस-पास के किसी भी आयुर्वेदिक दवा की दुकान से लाजवन्ती के बीज प्राप्त कर सकते हैं या आप इसे



विभिन्न ऑनलाइन दवा प्लेटफॉर्मों से भी खरीद सकते हैं।

प्र. लाजवन्ती के पौधे के पोषण कारक क्या है ?
वैज्ञानिक आधुनिक विज्ञान दर्शन लाजवन्ती के पौधे को हिंदी में चूईं मुई के नाम से भी जाना जाता है जो महत्वपूर्ण पोषक तत्वों से भरपूर होता है जिसका उपयोग पारंपरिक चिकित्सा में विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता था। इसमें अल्कलॉइड्स, अमीनो एसिड, फ्लेवोनॉइड्स, ग्लाइकोसाइड्स, स्टेरोल्स, टेरपेनॉइड्स, टैनिन और फेटी एसिड होते हैं। इसके अलावा, अध्ययनों से पता चलता है कि पौधे में एंटी-डायबिटिक, एंटी-हेपेटोटाक्सिक, एंटीऑक्सिडेंट, एंटी-दमा, कामोत्तेजक, शामक और घाव भरने वाले गुण होते हैं [17]।

Q. मिमोसा पुडिका खतरनाक है ?
वैज्ञानिक आधुनिक विज्ञान दर्शन नहीं, यह कोई खतरनाक पौधा नहीं है। यह कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय की सुरक्षित और जहरीले बगीचे के पौधों की सूची में मनुष्यों के लिए एक गैर-विषैले पौधे के रूप में सूचीबद्ध है।

प्र. मिमोसा पुडिका का सामान्य नाम क्या है ?
वैज्ञानिक आधुनिक विज्ञान दर्शन मिमोसा पुडिका को आमतौर पर लाजवन्ती या चूईं मुई के नाम से जाना जाता है।

प्र. लाजवन्ती के पौधे को छूने पर उसकी क्या प्रतिक्रिया होती है ?
वैज्ञानिक आधुनिक विज्ञान दर्शन मिमोसा पुडिका या लाजवन्ती के पौधे में संवेदनशील मुलायम भूरे रंग के पत्ते होते हैं जो रात में या छूने और ठंडा करने पर मुड़ जाते हैं और गिर जाते हैं। ये अंडा झुकने वाली हरकतें इस पौधे को “ब्यूरोसुटी प्लांट” की पहचान देती हैं [16]।

Q. क्या लाजवन्ती मधुमेह को प्रबंधित करने में मदद करती है ?
वैज्ञानिक आधुनिक विज्ञान दर्शन नहीं, लाजवन्ती अपने ब्लड शुगर को कम करने वाले प्रभाव के कारण मधुमेह को प्रबंधित करने में मदद कर सकती है। लाजवन्ती में मौजूद कुछ घटक अग्न्याशय की कोशिकाओं के नुकसान को रोकते हैं और इसके एंटीऑक्सिडेंट और विरोधी भड़काऊ गुणों के कारण इंसुलिन साव को बढ़ाते हैं। यह मधुमेह को प्रबंधित करने के साथ-साथ मधुमेह संबंधी जटिलताओं के जोखिम को कम करने में मदद करता है [5]।

आयुर्वेदिक आयुर्वेदिक दृष्टिकोण मधुमेह, जिसे मधुमेह भी कहा जाता है, वात-कफ दोष के विगड़ने के साथ-साथ खराब पाचन के कारण होता है। बिगड़ा हुआ पाचन अग्न्याशय की कोशिकाओं में अमा (शरीर में अनुचित पाचन के कारण विषाक्त अवशेष) के संचय की ओर जाता है और इंसुलिन के कार्य को बाधित करता है। लाजवन्ती इंसुलिन के सामान्य कामकाज को बनाए रखने में मदद कर सकती है और इसके कफ संतुलन गुण के कारण मधुमेह के प्रबंधन में मदद कर सकती है।

प्र. डिप्रेशन के लिए लाजवन्ती के क्या फायदे हैं ?
वैज्ञानिक आधुनिक विज्ञान दर्शन लाजवन्ती अपनी एंटीडिप्रेशन गतिविधि के कारण अवसाद को कम करने में मदद कर सकती है। इसमें फ्लेवोनॉइड्स जैसे कुछ जैव रासायनिक यौगिक होते हैं जो शरीर में सेरोटोनिन नामक रसायन को बढ़ाने में मदद करते हैं जो अवसाद को कम करने में मदद करता है [6]।

Q. क्या लाजवन्ती मिर्गों में मदद करती है ?
हां, लाजवन्ती अपने एंटीऑक्सिडेंट गुणों के कारण मिर्गों में मदद कर सकती है। इसमें फ्लेवोनॉइड्स के रूप में जाने जाने वाले कुछ घटक होते हैं जो मांसपेशियों के संकुचन को प्रबंधित करने और ऐंठन को रोकने में मदद करते हैं [7]।

प्र. क्या लाजवन्ती मूत्राधिक्य में सहायक है ?
हां, लाजवन्ती अपनी मूत्रवर्धक गतिविधि के कारण मूत्राधिक्य में मदद करती है। यह मूत्र के उत्पादन को बढ़ाता है और मात्रा अधिभार की स्थिति [8] में उपयोगी है।

प्र. क्या लाजवन्ती सांप के जहर के खिलाफ काम करती है ?
हां, लाजवन्ती का इस्तेमाल सांप के जहर को रोकने के लिए किया जा सकता है। सांप के जहर में कई तरह के विष होते हैं जो गंभीर प्रतिक्रिया और कभी-कभी मौत का कारण भी बन सकते हैं। लाजवन्ती लक्ष्य स्थल तक पहुँचने से पहले रक्त में जहर को बेअसर करने में मदद करती है, इस प्रकार यह एक एंटी-वेनम के रूप में काम करती है।

प्र. लाजवन्ती कृमि संक्रमण को कम करने में कैसे मदद करती है ?
लाजवन्ती अपनी कृमिनाशक गतिविधि के कारण कृमि संक्रमण को कम करने में मदद कर सकती है। लाजवन्ती में एंटीपैरासिटिक एजेंट होते हैं जो परजीवी कीड़े को उनकी गतिविधि को मारकर या दबाकर शरीर से बाहर निकाल देते हैं [4]।

प्र. क्या लाजवन्ती कामोत्तेजक के रूप में काम करती है ?
हां, लाजवन्ती एक कामोत्तेजक के रूप में काम कर सकती है। यह स्पर्म काउंट और मूवमेंट को बढ़ाता है। विभिन्न अध्ययनों से यह भी पता चलता है कि लाजवन्ती स्खलन के समय में देरी करके यौन प्रदर्शन में सुधार करती है।

Q. क्या लाजवन्ती मलेरिया के लिए फायदेमंद है ?
लाजवन्ती में फ्लेवोनॉइड्स के रूप में जाने जाने वाले कुछ घटक होते हैं जिनमें रोगाणुरोधी गतिविधि होती है और मलेरिया परजीवी के विकास को दबाकर मलेरिया के मामले में मदद कर सकता है।

Q. दस्त के लिए लाजवन्ती के क्या फायदे हैं ?
लाजवन्ती टैनिन, फ्लेवोनॉइड्स और अल्कलॉइड्स से भरपूर होती है जो आंतों की गति को बाधित करने में मदद करती है। यह एजेंटों के विकास को भी रोकता है जो इसकी रोगाणुरोधी गतिविधि [13] के कारण दस्त का कारण बनता है। आयुर्वेदिक दृष्टिकोण डायरिया, आयुर्वेद में अतिसार के रूप में जाना जाता है, अनुचित भोजन, अशुद्ध पानी, विषाक्त पदार्थों, मानसिक तनाव और अग्निमांदा (कमजोर पाचन अग्नि) के कारण होता है। ये सभी कारक वात को बढ़ाने के लिए जिम्मेदार होते हैं। यह बढ़ा हुआ वात शरीर के विभिन्न ऊतकों से आंतों में तरल पदार्थ लाता है और मल के साथ मिल जाता है जिससे ढीली, पानी जैसी गति या दस्त होता है। लाजवन्ती अपने ग्रीही (शोषक) और कषाय (कसैले) गुणों के कारण अत्यधिक तरल पदार्थ को अवशोषित करने और दस्त को प्रबंधित करने में मदद करती है।

Q. क्या लाजवन्ती को गर्भनिरोधक के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है ?
हां, लाजवन्ती को इसके शुक्राणुनाशक गुणों के कारण गर्भनिरोधक के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। यह एंटीस्टेरोन के स्तर को कम करता है जिससे शुक्राणुओं की संख्या कम हो जाती है।

Q. क्या लाजवन्ती गैस्ट्रिक अल्सर के लिए अच्छा है ?
हां, लाजवन्ती गैस्ट्रिक अल्सर को प्रबंधित करने में मदद कर सकती है। लाजवन्ती में मौजूद कुछ घटक जिन्हें फ्लेवोनॉइड्स के रूप में जाना जाता है, पेट में अम्लीय वातावरण को बेअसर करने में मदद करते हैं, जिससे अल्सर के गठन के साथ-साथ अल्सर के कारण होने वाली जलन को कम किया जा सकता है [14]।

आयुर्वेदिक आयुर्वेदिक दृष्टिकोण गैस्ट्रिक अल्सर अपच और असंतुलित पित्त दोष के कारण होता है और जलन जैसे कुछ लक्षणों का कारण बनता है। लाजवन्ती अपने पित्त संतुलन और सीता (ठंडा) गुणों के कारण गैस्ट्रिक अल्सर को प्रबंधित करने में मदद करती है। यह जलन जैसे लक्षणों को कम करने में मदद करता है और राहत प्रदान करता है।

प्र. छुईं मुई (लाजवन्ती) पौधे के क्या उपयोग हैं ?
लाजवन्ती का पौधा या मिमोसा पुडिका में विभिन्न जैविक और औषधीय गुण होते हैं। जड़ी बूटी का उपयोग मूत्रजननांगी विकारों, बवासीर, पेटिशर, साइनस के उपचार में किया जाता है और घावों पर भी लगाया जाता है। इसके अलावा, कुछ अध्ययनों से पता चलता है कि पौधे अवसाद के उपचार में लाभकारी प्रभाव दिखा सकता है क्योंकि

इसमें कुछ एंटीडिप्रेशन के समान कार्य होते हैं। [16]।

Q. क्या लाजवन्ती घाव भरने में मदद करती है ?
हां, लाजवन्ती पेस्ट घाव भरने को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है। लाजवन्ती में मौजूद फाइटोकोन्सट्रिक्ट्यूट्स में एंटीऑक्सिडेंट, एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटीमाइक्रोबियल गुण होते हैं जो घाव के सिकुड़ने और बंद होने की दर को बढ़ाने में मदद करते हैं। यह कोलेजन के निर्माण और नई त्वचा कोशिकाओं के पुनर्जनन में भी मदद करता है। यह घाव में संक्रमण के जोखिम को भी कम करता है, जिससे घाव भरने को बढ़ावा मिलता है। आयुर्वेदिक दृष्टिकोण घाव किसी बाहरी चोट के कारण होते हैं और दर्द, सूजन या कभी-कभी रक्तस्राव जैसे कुछ लक्षण भी हो सकते हैं। लाजवन्ती अपने सीता (ठंडी) और रोपण (उपचार) गुणों के कारण घाव भरने में मदद करती है। यह घावों के उपचार को बढ़ावा देने के साथ-साथ दर्द और सूजन को कम करने में मदद करता है।

Q. क्या लाजवन्ती सूजन को कम करने में मदद करती है ?
हां, लाजवन्ती पेस्ट अपने सूजन-रोधी गुण के कारण प्रभावी क्षेत्र पर लगाने पर सूजन को कम करने में मदद कर सकता है। यह मध्यस्थों के विकास को रोकता है जो सूजन को प्रेरित करता है और दर्द और सूजन को कम करता है। आयुर्वेदिक दृष्टिकोण सूजन एक लक्षण है जो घाव वृद्धि के लिए जिम्मेदार है जो प्रभावी जगह पर लगाने से इसके सीता (ठंडा) गुणों के कारण सूजन को कम करने में मदद मिल सकती है।

Q. क्या लाजवन्ती सिरदर्द के लिए फायदेमंद है ?
हालांकि पर्याप्त वैज्ञानिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन कुछ अध्ययनों से पता चलता है कि लाजवन्ती सिरदर्द को प्रबंधित करने में मदद कर सकता है। लाजवन्ती का लेप माथे पर लगाने से माइग्रन के साथ-साथ सिरदर्द से भी राहत मिलती है आयुर्वेदिक दृष्टिकोण पित्त दोष के असंतुलन के कारण सिरदर्द होता है। लाजवन्ती के लेप को इसके पित्त संतुलन गुण के कारण सिर दर्द से राहत दिलाने के लिए माथे पर लगाया जा सकता है।

प्र. पाइल्स के लिए लाजवन्ती का पौधा नहीं आप मुझे छूने के लिए कैसे इस्तेमाल करते हैं ?
अन्य औषधीय पौधों की पत्तियों के साथ लाजवन्ती के पौधे की पत्तियों का उपयोग बवासीर और मूत्र संक्रमण के उपचार में किया जाता है। ताजी कुचली हुई पत्तियों के रस को बवासीर में अंदर और बाहर दोनों जगह इस्तेमाल किया जा सकता है। पौधे में हेमोस्टैटिक गुण होता है जो बवासीर में रक्तस्राव को नियंत्रित करने में मदद करता है। इसे बाहरी रूप से दरारों, त्वचा के घावों और छालों पर भी लगाया जा सकता है [18]।

आयुर्वेदिक आयुर्वेदिक दृष्टिकोण लाजवन्ती अपने कषाय (कसैले) गुण के कारण बवासीर के लक्षणों जैसे रक्तस्राव को प्रबंधित करने के लिए एक प्रभावी उपाय है जो रक्तस्राव को रोकने में मदद करता है और जल्दी से ठीक होने को बढ़ावा देता है।

॥ शुभ वंदन ॥
*ॐ सर्वं भवतु सुखिनः।
सर्वं सन्तु निरामयः।
सर्वं भ्रष्टाणं परमयुतः।
मा कश्चित्दुःखं भाग्भवेत्॥

सर्वं भ्रष्टाणं परमयुतः।
मा कश्चित्दुःखं भाग्भवेत्॥

1. बवासीर
बवासीर को आयुर्वेद में अर्श के नाम से जाना जाता है। यह एक अस्वास्थ्यकर आहार और गतिहीन जीवन शैली के कारण होता है। इससे तीनों दोषों, मुख्य रूप से वात की हानि होती है। बड़े हुए वात के कारण पाचन अग्नि कम हो जाती है, जिससे कब्ज हो जाता है। यह मलाशय क्षेत्र में नसों में सूजन का कारण बनता है जिससे बवासीर और दर्द, खुजली या जलन जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। लाजवन्ती अपने पित्त और कफ को संतुलित करने वाले गुणों के कारण पाइल्स को प्रबंधित करने में मदद करती है। यह अपनी सीता (ठंडी) प्रकृति और कषाय (कसैले) गुण के कारण जलन और बेचैनी को भी कम करता है।

2. दस्त
डायरिया को आयुर्वेद में अतिसार के नाम से जाना जाता है। यह अनुचित भोजन, अशुद्ध पानी, विषाक्त पदार्थों, मानसिक तनाव और अग्निमांदा (कमजोर पाचन अग्नि) के कारण होता है। ये सभी कारक वात को बढ़ाने के लिए जिम्मेदार होते हैं। यह वात को बढ़ाता है जिससे अमा बनता है और शरीर के विभिन्न ऊतकों से आंत में तरल पदार्थ लाता है और मल के साथ मिल जाता है। इससे लूज, वाटर मोशन या डायरिया हो जाता है। लाजवन्ती अमा को पचाने और पाचन में सुधार करने में मदद करती है, जिससे इसके कफ संतुलन गुण के कारण डायरिया का प्रबंधन होता है।

3. पेटिशर
खाने की गलत आदतों के कारण, व्यक्ति को अग्निमांदा (कम पाचन अग्नि) का अनुभव हो सकता है जो कफ दोष के असंतुलन का कारण बनता है। इसके परिणामस्वरूप अमा का संचय होता है जो मल के साथ मिल जाता है और कभी-

चलना, ज्यादा जागना, ज्यादा बात करना, दिन में सोना, ज्यादा सेक्स करना, ज्यादा उपवास करना, अनियमित समय पर खाना, सूखा खाना, बासी बहने हैं। जब आपको सर्दी होती है, तो कुछ दिनों बाद आपको खांसी जरूर आएगी। खांसी तब होती है जब कई तरह का धुआं, धूल या बंदबू नाक और गले में जाती है। कुछ खास तरह की खुशबू या परफ्यूम, केमिकल बंदबू जैसे बैंगन सें वगैरह, आइसक्रीम, ठंडा पानी, कोल्ड ड्रिंक्स, शर्बत से खांसी होती है। ठंडी जगह पर रहने या जाने, एयर कंडीशनिंग (एयर कंडीशनिंग) का ज्यादा इस्तेमाल करने से खांसी हो सकती है। ज्यादा खाना खाते समय कोई कण सांस में जाने से भी खांसी हो सकती है। ज्यादा एक्सरसाइज, वजन उठाना, ज्यादा

बैठना, खांसने से मुंह सूखना और थकान महसूस होना जैसे लक्षण दिखते हैं। सूखी खांसी को काली खांसी कहते हैं। कफ खांसी का इलाज अड्डुलसा के पौधे का रस निकालकर उसमें शहद मिलाने या उसका काढ़ा बनाकर पीने से खांसी कम होती है। एलोवेरा को भूनकर, उसका गूदा निकालकर, शहद में मिलाकर चाटने से खांसी कम होती है। दालचीनी पाउडर को शहद के साथ बार-बार चाटना चाहिए, इससे खांसी कम होती है। अंगूर का रस, कुमारा का रस, अड्डुलसा का शरबत, पिंपरसाव बाजार में मिलने वाली उपयोगी दवाएँ हैं। तिल के तेल और चंदन से छाती की मालिश करें और गर्म पानी की बोतल और कपड़े से सेंक लें। दो चम्मच तुलसी का रस और एक चम्मच अदरक का

रस और शहद चाटने के तौर पर दे या तुलसी का काढ़ा बनाकर पीएं, इससे खांसी कम होती है। घास की चाय का काढ़ा बनाएं। इसमें अदरक, काली मिर्च, दालचीनी, गुड़ मिलाएं और एक कप काढ़ा पीएं। खांसी और जुकाम कम होता है। इलायची और लौंग को तवे पर भूनकर उनकी राख को शहद के साथ चाटने से कफ और खांसी तुरंत कम हो जाती है। अगर आपको सूखी खांसी है या अस्थमा की वजह से खांसी है, तो नारियल तेल, तिल का तेल या सहजूर तेल या दो-तीन चम्मच गाय का घी, गर्म पानी और एक चुटकी नमक मिलाकर पीने से खांसी तुरंत कम हो जाएगी। तेल या घी इस खांसी के लिए एक असरदार दवा है। कपास के फूल और पत्तियों को सुखाकर

जलाकर राख बना लें और राख को एक चुटकी शहद या तेल के साथ चाट लें। खांसी और अस्थमा तुरंत कम हो जाएगी। सागौन के पत्ते, पलाश के पत्ते, कपास के पत्ते, फूल, अवलकडी और उसकी राख, त्रिफला या बड़ी लौंग, इलायची और गाय के गोबर की राख जलाना इस खांसी का असरदार इलाज है।

अनार का छिलका चाटने या उसमें घी और नमक मिलाकर पीने से खांसी तुरंत बंद हो जाएगी, चाहे कितनी भी तेज खांसी हो। हल्दी, अदरक, गुड़ मिलाकर उसका पेस्ट बना लें और हर 10-15 मिनट में चबाएं। इससे भी खांसी कम हो जाती है। अगर सूखी खांसी तेज हो, तो थोड़ा सा तेल एनिमा की तरह दें, यह तुरंत असर करता है।

गेट लाइफ लेजर पाइल्स हॉस्पिटल

जलाकर राख बना लें और राख को एक चुटकी शहद या तेल के साथ चाट लें। खांसी और अस्थमा तुरंत कम हो जाएगी। सागौन के पत्ते, पलाश के पत्ते, कपास के पत्ते, फूल, अवलकडी और उसकी राख, त्रिफला या बड़ी लौंग, इलायची और गाय के गोबर की राख जलाना इस खांसी का असरदार इलाज है।

अनार का छिलका चाटने या उसमें घी और नमक मिलाकर पीने से खांसी तुरंत बंद हो जाएगी, चाहे कितनी भी तेज खांसी हो। हल्दी, अदरक, गुड़ मिलाकर उसका पेस्ट बना लें और हर 10-15 मिनट में चबाएं। इससे भी खांसी कम हो जाती है। अगर सूखी खांसी तेज हो, तो थोड़ा सा तेल एनिमा की तरह दें, यह तुरंत असर करता है।

गेट लाइफ लेजर पाइल्स हॉस्पिटल



खांसी, अपनी सेहत का ख्याल रखें: कलेक्शन: अनिल सखारकर

खांसी की दवा लेने से पहले, आपको यह समझना चाहिए कि आपको किस तरह की खांसी है। सर्दी और खांसी जुड़वां बहने हैं। जब आपको सर्दी होती है, तो कुछ दिनों बाद आपको खांसी जरूर आएगी। खांसी तब होती है जब कई तरह का धुआं, धूल या बंदबू नाक और गले में जाती है। कुछ खास तरह की खुशबू या परफ्यूम, केमिकल बंदबू जैसे बैंगन सें वगैरह, आइसक्रीम, ठंडा पानी, कोल्ड ड्रिंक्स, शर्बत से खांसी होती है। ठंडी जगह पर रहने या जाने, एयर कंडीशनिंग (एयर कंडीशनिंग) का ज्यादा इस्तेमाल करने से खांसी हो सकती है। ज्यादा खाना खाते समय कोई कण सांस में जाने से भी खांसी हो सकती है। ज्यादा एक्सरसाइज, वजन उठाना, ज्यादा

बैठना, खांसने से मुंह सूखना और थकान महसूस होना जैसे लक्षण दिखते हैं। सूखी खांसी को काली खांसी कहते हैं। कफ खांसी का इलाज अड्डुलसा के पौधे का रस निकालकर उसमें शहद मिलाने या उसका काढ़ा बनाकर पीने से खांसी कम होती है। एलोवेरा को भूनकर, उसका गूदा निकालकर, शहद में मिलाकर चाटने से खांसी कम होती है। दालचीनी पाउडर को शहद के साथ बार-बार चाटना चाहिए, इससे खांसी कम होती है। अंगूर का रस, कुमारा का रस, अड्डुलसा का शरबत, पिंपरसाव बाजार में मिलने वाली उपयोगी दवाएँ हैं। तिल के तेल और चंदन से छाती की मालिश करें और गर्म पानी की बोतल और कपड़े से सेंक लें। दो चम्मच तुलसी का रस और एक चम्मच अदरक का

रस और शहद चाटने के तौर पर दे या तुलसी का काढ़ा बनाकर पीएं, इससे खांसी कम होती है। घास की चाय का काढ़ा बनाएं। इसमें अदरक, काली मिर्च, दालचीनी, गुड़ मिलाएं और एक कप काढ़ा पीएं। खांसी और जुकाम कम होता है। इलायची और लौंग को तवे पर भूनकर उनकी राख को शहद के साथ चाटने से कफ और खांसी तुरंत कम हो जाती है। अगर आपको सूखी खांसी है या अस्थमा की वजह से खांसी है, तो नारियल तेल, तिल का तेल या सहजूर तेल या दो-तीन चम्मच गाय का घी, गर्म पानी और एक चुटकी नमक मिलाकर पीने से खांसी तुरंत कम हो जाएगी। तेल या घी इस खांसी के लिए एक असरदार दवा है। कपास के फूल और पत्तियों को सुखाकर

जलाकर राख बना लें और राख को एक चुटकी शहद या तेल के साथ चाट लें। खांसी और अस्थमा तुरंत कम हो जाएगी। सागौन के पत्ते, पलाश के पत्ते, कपास के पत्ते, फूल, अवलकडी और उसकी राख, त्रिफला या बड़ी लौंग, इलायची और गाय के गोबर की राख जलाना इस खांसी का असरदार इलाज है।

अनार का छिलका चाटने या उसमें घी और नमक मिलाकर पीने से खांसी तुरंत बंद हो जाएगी, चाहे कितनी भी तेज खांसी हो। हल्दी, अदरक, गुड़ मिलाकर उसका पेस्ट बना लें और हर 10-15 मिनट में चबाएं। इससे भी खांसी कम हो जाती है। अगर सूखी खांसी तेज हो, तो थोड़ा सा तेल एनिमा की तरह दें, यह तुरंत असर करता है।

गेट लाइफ लेजर पाइल्स हॉस्पिटल

जलाकर राख बना लें और राख को एक चुटकी शहद या तेल के साथ चाट लें। खांसी और अस्थमा तुरंत कम हो जाएगी। सागौन के पत्ते, पलाश के पत्ते, कपास के पत्ते, फूल, अवलकडी और उसकी राख, त्रिफला या बड़ी लौंग, इलायची और गाय के गोबर की राख जलाना इस खांसी का असरदार इलाज है।

अनार का छिलका चाटने या उसमें घी और नमक मिलाकर पीने से खांसी तुरंत बंद हो जाएगी, चाहे कितनी भी तेज खांसी हो। हल्दी, अदरक, गुड़ मिलाकर उसका पेस्ट बना लें और हर 10-15 मिनट में चबाएं। इससे भी खांसी कम हो जाती है। अगर सूखी खांसी तेज हो, तो थोड़ा सा तेल एनिमा की तरह दें, यह तुरंत असर करता है।

गेट लाइफ लेजर पाइल्स हॉस्पिटल

जलाकर राख बना लें और राख को एक चुटकी शहद या तेल के साथ चाट लें। खांसी और अस्थमा तुरंत कम हो जाएगी। सागौन के पत्ते, पलाश के पत्ते, कपास के पत्ते, फूल, अवलकडी और उसकी राख, त्रिफला या बड़ी लौंग, इलायची और गाय के गोबर की राख ज

धर्म अध्यात्म



ये हैं शिवपुराण के छोटे-छोटे उपाय, कर सकते हैं आपकी हर इच्छा पूरी ?

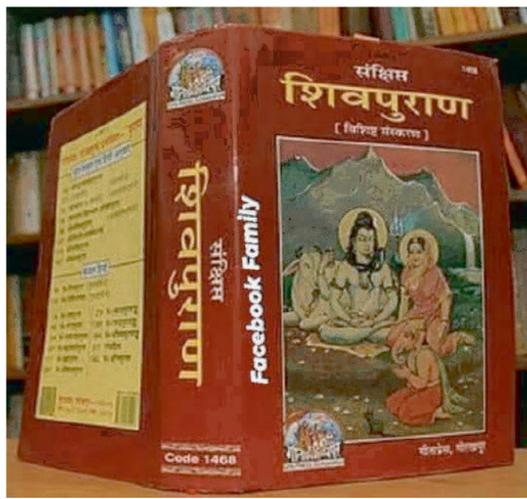


पिंकी कुंडू

भगवान शिव बहुत भोले हैं, यदि कोई भक्त सच्ची श्रद्धा से उन्हें सिर्फ एक लोटा पानी भी अर्पित करे तो भी वे प्रसन्न हो जाते हैं। इसीलिए उन्हें भोलेनाथ भी कहा जाता है। भगवान भोलेनाथ को प्रसन्न करने के लिए कुछ छोटे और अचूक उपायों के बारे में शिवपुराण में भी लिखा है। ये उपाय इतने सरल हैं कि इन्हें बड़ी ही आसानी से किया जा सकता है। हर समस्या के समाधान के लिए शिवपुराण में एक अलग उपाय बताया गया है। ये उपाय इस प्रकार हैं- शिवपुराण के अनुसार, भगवान शिव को प्रसन्न करने के उपाय इस प्रकार हैं- 1. भगवान शिव को चावल चढ़ाने से धन की प्राप्ति होती है। 2. तिल चढ़ाने से पापों का नाश हो जाता है। 3. जो अर्पित करने से सुख में वृद्धि

होती है। 4. गेहूं चढ़ाने से संतान वृद्धि होती है। यह सभी अन्न भगवान को अर्पण करने के बाद गरीबों में बांट देना चाहिए। शिवपुराण के अनुसार, जानिए भगवान शिव को कौन-सा रस (द्रव्य) चढ़ाने से क्या फल मिलता है- 1. बुखार होने पर भगवान शिव को जल चढ़ाने से शीघ्र लाभ मिलता है। सुख व संतान की वृद्धि के लिए भी जल द्वारा शिव की पूजा उत्तम बताई गई है। 2. तेज दिमाग के लिए शक्कर मिला दूध भगवान शिव को चढ़ाएं। 3. शिवलिंग पर गन्ने का रस चढ़ाया जाए तो सभी आनंदों की प्राप्ति होती है। 4. शिव को गंगा जल चढ़ाने से भोग व मोक्ष दोनों की प्राप्ति होती है। 5. शहद से भगवान शिव का अभिषेक करने से टीबी रोग में आराम मिलता है। 6. यदि शारीरिक रूप से कमजोर कोई व्यक्ति भगवान शिव का अभिषेक गाय के शुद्ध घी से करे तो उसकी कमजोरी दूर हो सकती है। शिवपुराण के अनुसार, जानिए भगवान शिव को कौन-सा फल चढ़ाने से क्या फल मिलता है- 1. लाल व सफेद आंकड़े के फूल से भगवान शिव का पूजन करने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है। 2. चमेली के फूल से पूजन करने पर वाहन सुख मिलता है। 3. अलसी के फूलों से शिव का पूजन करने पर मनुष्य भगवान विष्णु को प्रिय होता है। 4. शमी वृक्ष के पत्तों से पूजन करने पर मोक्ष प्राप्त होता है। 5. बेला के फूल से पूजन करने पर सुंदर व सुशील पत्नी मिलती है। 6. जूही के फूल से भगवान शिव का पूजन करे तो घर में कभी अन्न की कमी नहीं होती। 7. कनेर के फूलों से भगवान शिव का पूजन करने से नए वस्त्र मिलते हैं। 8. हरसिंगार के फूलों से पूजन करने पर सुख-सम्पत्ति में वृद्धि होती है। 9. धतूरे के फूल से पूजन करने पर भगवान शंकर सुयोग्य पुत्र प्रदान करते हैं, जो कुल का नाम रोलन करता है। 10. लाल डंठलवाला धतूरा शिव पूजन में शुभ माना गया है। 11. दूर्वा से भगवान शिव का पूजन करने पर आयु बढ़ती है। इन उपायों से प्रसन्न होते हैं भगवान शिव 1. सावन में रोज 21 बिल्वपत्रों पर चंदन से ऊं नमः शिवाय लिखकर शिवलिंग पर

चढ़ाएं। इससे आपकी सभी मनोकामनाएँ पूरी हो सकती हैं। 2. अगर आपके घर में किसी भी प्रकार की परेशानी हो तो सावन में रोज सुबह घर में गोमूत्र का छिड़काव करें तथा गुग्गुलु का धूप दें। 3. यदि आपके विवाह में अड़चन आ रही है तो सावन में रोज शिवलिंग पर केसर मिला हुआ दूध चढ़ाएं। इससे जल्दी ही आपके विवाह के योग बन सकते हैं। 4. सावन में रोज नंदी (बैल) को हरा चारा खिलाएं। इससे जीवन में सुख-समृद्धि आएगी और मन प्रसन्न रहेगा। 5. सावन में गरीबों को भोजन कराएं, इससे आपके घर में कभी अन्न की कमी नहीं मिलेगी। 6. सावन में रोज सुबह जल्दी उठकर स्नान आदि से निपट कर समीप स्थित किसी शिव मंदिर में जाएं और भगवान शिव का जल से अभिषेक करें और उन्हें काले तिल अर्पण करें। इसके बाद मंदिर में कुछ देर बैठकर मन ही मन में ऊं नमः शिवाय मंत्र का जाप करें। इससे मन को शांति मिलेगी। 7. सावन में किसी नदी या तालाब जाकर आटे की गोलियां मछलियों को खिलाएं। जब तक यह काम करें मन ही मन में भगवान शिव का ध्यान करते रहें। यह धन प्राप्ति का बहुत ही सरल उपाय है। आमदनी बढ़ाने के लिए सावन के महीने में किसी भी दिन घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें और उसकी यथा विधि पूजा करें। इसके बाद नीचे लिखे मंत्र का 108 बार जाप करें- ऐं ह्रीं श्रीं ऊं नमः शिवायः श्रीं ह्रीं ऐं प्रत्येक मंत्र के साथ बिल्वपत्र पारद शिवलिंग पर चढ़ाएं। बिल्वपत्र के तीनों दलों पर लाल चंदन से क्रमशः ऐं, ह्रीं, श्रीं लिखें। अंतिम 108 बिल्वपत्र को शिवलिंग पर चढ़ाने के बाद निकाल लें तथा उसे अपने पूजन स्थान पर रखकर प्रतिदिन उसकी पूजा करें। माना जाता है ऐसा करने से व्यक्ति की



इससे आपके घर में कभी अन्न की कमी नहीं होगी तथा पितरों की आत्मा को शांति मिलेगी। 6. सावन में रोज सुबह जल्दी उठकर स्नान आदि से निपट कर समीप स्थित किसी शिव मंदिर में जाएं और भगवान शिव का जल से अभिषेक करें और उन्हें काले तिल अर्पण करें। इसके बाद मंदिर में कुछ देर बैठकर मन ही मन में ऊं नमः शिवाय मंत्र का जाप करें। इससे मन को शांति मिलेगी। 7. सावन में किसी नदी या तालाब जाकर आटे की गोलियां मछलियों को खिलाएं। जब तक यह काम करें मन ही मन में भगवान शिव का ध्यान करते रहें। यह धन प्राप्ति का बहुत ही सरल उपाय है। आमदनी बढ़ाने के लिए सावन के महीने में किसी भी दिन घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें और उसकी यथा विधि पूजा करें। इसके बाद नीचे लिखे मंत्र का 108 बार जाप करें- ऐं ह्रीं श्रीं ऊं नमः शिवायः श्रीं ह्रीं ऐं प्रत्येक मंत्र के साथ बिल्वपत्र पारद शिवलिंग पर चढ़ाएं। बिल्वपत्र के तीनों दलों पर लाल चंदन से क्रमशः ऐं, ह्रीं, श्रीं लिखें। अंतिम 108 बिल्वपत्र को शिवलिंग पर चढ़ाने के बाद निकाल लें तथा उसे अपने पूजन स्थान पर रखकर प्रतिदिन उसकी पूजा करें। माना जाता है ऐसा करने से व्यक्ति की

आमदानी में इजाफा होता है। संतान प्राप्ति के लिए उपाय सावन में किसी भी दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान आदि करने के बाद भगवान शिव का पूजन करें। इसके पश्चात गेहूं के आटे से 11 शिवलिंग बनाएं। अब प्रत्येक शिवलिंग का शिव महिम्न स्तोत्र से जलाभिषेक करें। इस प्रकार 11 बार जलाभिषेक करें। उस जल का कुछ भाग प्रसाद के रूप में ग्रहण करें। यह प्रयोग लगातार 21 दिन तक करें। गर्भ की रक्षा के लिए और संतान प्राप्ति के लिए गर्भ गौरी रुद्राक्ष भी धारण करें। इसे किसी शुभ दिन शुभ मुहूर्त देखकर धारण करें। बीमारी ठीक करने के लिए उपाय सावन में किसी सोमवार को पानी में दूध व काले तिल डालकर शिवलिंग का अभिषेक करें। अभिषेक के लिए तांबे के बर्तन को छोड़कर किसी अन्य धातु के बर्तन का उपयोग करें। अभिषेक करते समय ऊं जूं सः मंत्र का जाप करते रहें। इसके बाद भगवान शिव से रोग निवारण के लिए प्रार्थना करें और प्रत्येक सोमवार को रात में सवा नी बजे के बाद गाय के सवा पाव कच्चे दूध से शिवलिंग का अभिषेक करने का संकल्प लें। इस उपाय से बीमारी ठीक होने में लाभ मिलता है।

श्री काल-भैरव पिंकी कुंडू भगवान भैरव की महिमा अनेक शास्त्रों में मिलती है। भैरव जहाँ शिव के गणके रूप में जाने जाते हैं, वहीं वे दुर्गा के अनुचारी माने गए हैं। भैरव की सवारी कुत्ता है। चमेली फूल प्रिय होने के कारण उपासना में इसका विशेष महत्व है। साथ ही भैरव शक्ति के देवता माने जाते हैं और इनकी आराधना का खास समय भी मध्य रात्रि में 12 से 3 बजे का माना जाता है। शास्त्रों के अनुसार भगवान शिव के दो स्वरूप बताए गए हैं। एक स्वरूप में महादेव अपने भक्तों को अभय देने वाले विश्वेश्वर स्वरूप में हैं वहीं दूसरे स्वरूप में भगवान शिव दुष्टों को दंड देने वाले कालभैरव स्वरूप में विद्यमान हैं। शिवजी का विश्वेश्वर स्वरूप अत्यंत ही सौम्य और शांत है यह भक्तों को सुख, शांति और समृद्धि प्रदान करता है वहीं भैरव स्वरूप रौद्र रूप वाले हैं, इनका रूप भयानक और विकराल होता है। इनकी पूजा करने वाले भक्तों को किसी भी प्रकार डर कभी परेशान नहीं करता। कलयुग में काल के भय से बचने के लिए कालभैरव की आराधना सबसे अच्छा उपाय है। कालभैरव को शिवजी का ही रूप माना गया है। कालभैरव की पूजा करने वाले व्यक्ति को किसी भी प्रकार का डर नहीं सताता है। भैरव शब्द का अर्थ ही होता है- भीषण, भयानक, डरावना। भैरव को शिव के द्वारा उष्यन हुआ या शिवपुत्र माना जाता है। भगवान शिव के आठ विभिन्न रूपों में से भैरव एक है। वह भगवान शिव का प्रमुख योद्धा है। भैरव के आठ स्वरूप पाए जाते हैं। जिनमें प्रमुखतः काला और गौरा भैरव अतिप्रसिद्ध हैं। रुद्रमाला से सुशोभित, जिनकी आंखों में से आग की लपटें निकलती हैं, जिनके हाथ में कपाल है, जो अति उग्र हैं, ऐसे कालभैरव को मैं वंदन करता हूँ। भगवान कालभैरव की इस वंदनात्मक प्रार्थना से ही उनके भयंकर एवं उग्र रूप का परिचय हमें मिलता है।

श्री काल-भैरव



दसों दिशाओं से रक्षा करते हैं श्री भैरव जानिए श्री भैरव की अद्भुत महिमा श्री भैरव के अनेक रूप हैं जिसमें प्रमुख रूप से बटुक भैरव, महाकाल भैरव तथा स्वर्णकण्ठ भैरव प्रमुख हैं। जिस भैरव की पूजा करें उसी रूप के नाम का उच्चारण होना चाहिए। सभी भैरवों में बटुक भैरव उपासना का अधिक प्रचलन है। तांत्रिक ग्रंथों में अष्ट भैरव के नामों की प्रसिद्धि है। वे इस प्रकार हैं- 1. अस्तितांग भैरव, 2. चंड भैरव, 3. रूद्र भैरव, 4. क्रोध भैरव, 5. उन्मत्त भैरव, 6. कपाल भैरव, 7. भीषण भैरव, 8. संहार भैरव, 9. क्षेत्रमालव, 10. दण्डपाणि के नाम से भी इन्हें जाना जाता है। 11. कालभैरव 12. आमदक 13. काशी के कोतवाल 1. श्री भैरव से काल भी भयभीत रहता है अतः उनका एक रूप 'काल भैरव' के नाम से विख्यात है। 2. दुष्टों का दमन करने के कारण इन्हें 'आमदक' कहा गया है। 3. शिवजी ने भैरव को काशी के कोतवाल पद पर प्रतिष्ठित किया है।

भैरव अपने भक्तों की सारी मनोकामनाएँ पूर्ण करके उनके कर्म सिद्धि को अपने आशीर्वाद से नवाजते हैं

यह व्युत्पत्ति दी गई है- विर्भात धारयति पुष्पातिरचयतीति भैरवः अर्थात् जो देव सृष्टि की रचना, पालन और संहार में समर्थ है, वह भैरव है। शिवपुराण में भैरव को भगवान शंकर का पूर्ण रूप बताया गया है। तत्वज्ञानी भगवान शंकर और भैरवनाथ में कोई अंतर नहीं मानते हैं। वे इन दोनों में अभेद दृष्टि रखते हैं। भैरव शब्द के तीन अक्षरों भ-र-व में ब्रह्मा-विष्णु-महेश की उत्पत्ति-पालन-संहार की शक्तियाँ सन्निहित हैं। नित्योपशिक्षाकार्णव की सेतुबन्ध नामक टीका में भी भैरव को सर्वशक्तिमान बताया गया है- भैरवः सर्वशक्तिभरितः। शैवों में कापालिक सम्प्रदाय के प्रधान देवता भैरव ही हैं। ये भैरव वस्तुतः रुद्र-स्वरूप सदाशिव ही हैं। शिव-शक्ति एक दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरे की उपासना कभी फलीभूत नहीं होती। यतिवर्गद्वैतव्य-विधान में शक्ति के साधक के लिए शिव-स्वरूप भैरव जी की आराधना अनिवार्य बताई गई है। रुद्रयामल में भी यही निर्देश है कि तत्र शास्त्रोक्त दस महाविद्याओं की साधना में सिद्धि प्राप्त करने के लिए भैरव की भी अर्चना करें। उदाहरण के लिए कालिका महाविद्या के साधक को भगवती काली के साथ कालभैरव की भी उपासना करनी होगी। इसी तरह प्रत्येक महाविद्या-शक्ति के साथ उनके शिव (भैरव) की आराधना का विधान है। दुर्गासप्तशती के प्रत्येक अध्याय अथवा चरित्र में भैरव-नामावली का समुद्र लगाकर पाठ करने से आश्चर्यजनक परिणाम सामने आते हैं, इससे असम्भव भी सम्भव हो जाता है। श्रीयंत्र के नौ आवरणों की पूजा में दीक्षा प्राप्त साधक देवियों के साथ भैरव की भी अर्चना करते हैं। अष्टसिद्धि के प्रदाता भैरवनाथ के मुख्यतः आठ स्वरूप ही सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं पूजित हैं। इनमें भी कालभैरव तथा बटुकभैरव की उपासना सबसे ज्यादा प्रचलित है। काशी के कोतवाल काल भैरव की कृपा के बिना वावा विश्वनाथ का सामीप्य नहीं मिलता है। वाराणसी में निर्वाण जप-तप, निवास, अनुष्ठान की सफलता के लिए कालभैरव का दर्शन-पूजन अवश्य करें। इनकी हाजिरी दिए बिना काशी की तीर्थयात्रा पूर्ण नहीं होती। इसी तरह उज्जयिनी के कालभैरव की बड़ी महिमा है। महाकालेश्वर की नगरी अवंतिकापुरी (उज्जैन) में स्थित कालभैरव के प्रत्यक्ष मद्य-पान को देखकर सभी चकित हो उठते हैं। धर्मग्रन्थों के अनुसार लीन से यह तथ्य विदित होता है कि भगवान शंकर के कालभैरव-स्वरूप का आधिर्भाव मार्गशीर्ष मास के कृष्णपक्ष की प्रदोषकाल-व्यापिनी अष्टमी में हुआ था, अतः यह तिथि कालभैरवाष्टमी के नाम से विख्यात हो गई। इस दिन भैरव-मंदिरों में विशेष पूजन और श्रृंगार बड़े धूमधाम से होता है। भैरवनाथ के भक्त कालभैरवाष्टमी के व्रत को अत्यन्त श्रद्धा के साथ रखते हैं। मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमी से प्रारम्भ करके प्रत्येक मास के कृष्णपक्ष की प्रदोष-व्यापिनी अष्टमी के दिन कालभैरव की पूजा, दर्शन तथा व्रत करने से भीषण संकट दूर होते हैं और कार्य-सिद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है। पंचांगों में इस अष्टमी को कालाष्टमी के नाम से प्रकाशित किया जाता है। ज्योतिषशास्त्र की बहुर्चांचत पुस्तक लाल किताब के अनुसार शनि के प्रकोप का शमन भैरव की आराधना से होता है। भैरवनाथ के व्रत एवं दर्शन-पूजन से शनि की पीडा कानिवारण होगा। कालभैरव को अनुकम्पा की कामना रखने वाले उनके भक्त तथा शनि की साहेसती, डैय्या अथवा शनि की अशुभ दशा से पीडित व्यक्ति इस कालभैरवाष्टमी से प्रारम्भ करके वर्ष पर्यन्त प्रत्येक कालाष्टमी को व्रत रखकर भैरवनाथ की उपासना करें। कालाष्टमी में दिन भर उपासना रखकर सायं सूर्यस्त के उपरांत प्रदोषकाल में भैरवनाथ की पूजा करके प्रसाद को भोजन के रूप में ग्रहण किया जाता है। मन्त्रविद्या का एक प्राचीन हस्तलिखित पाण्डुलिपि से महाकाल भैरव का यह मंत्र मिला है- ॐ हं षं नं गं कं सं खं महाकालभैरवाय नमः। इस मंत्र का 21 हजार बार जाप करने से बड़ी से बड़ी विपत्ति दूर हो जाती है। साधक भैरव जी के वाहन श्वान (कुत्ते) को नित्य कुछ खिलाने के बाद ही भोजन करे। सायबसदाशिव की अष्टमाृतियों में रुद्र अग्नि तत्व के अधिष्ठाता हैं। जिस तरह अग्नि तत्व के सभी गुण रुद्र में समाहित हैं, उसी प्रकार भैरवनाथ भी अग्नि के समान तेजस्वी हैं। भैरवजी कलियुग के जापत देवता हैं। भक्ति-भाव से इनका स्मरण करने मात्र से समस्याएँ दूर होती हैं।

कालभैरव ही है कालराज

भक्तवत्सल है कि सामान्य स्मरण एवं स्तुति से ही प्रसन्न होकर भक्त के संकटों का तत्काल निवारण कर देते हैं। तंत्राचार्यों का मानना है कि वेदों में जिस परम पुरुष का चित्रण रुद्र में हुआ, वह तंत्र शास्त्र के ग्रंथों में उस स्वरूप का वर्णन 'भैरव' के नाम से किया गया, जिसके भय से सूर्य एवं अग्नि तपते हैं। इंद्र-वायु और मृत्यु देवता अपने-अपने कामों में तत्पर हैं, वे परम शक्तिमान 'भैरव' ही हैं। भगवान शंकर के अवतारों में भैरव का अपना एक विशिष्ट महत्व है। तांत्रिक पद्धति में भैरव शब्द की निरुक्ति उनका विराट रूप प्रतिबिम्बित करती है। वामकेश्वर तंत्र की योगिनीहृदयदीपिका टीका में अमृतानन्द नाथ कहते हैं- 'विश्वस्य भरणाद् रमणाद् वमनात् सृष्टि-स्थिति-संहारकारी परशिवो भैरवः।' भ- से विश्व का भरण, र- से रमण, व- से वमन अर्थात् सृष्टि को उत्पत्ति पालन और संहार करने वाले शिव ही भैरव हैं। तंत्रालोक की विवेक-टीका में भगवान शंकर के भैरव रूप को ही सृष्टि का संचालक बताया गया है। श्री तंत्रनिधि नाम तंत्र-मंत्र में भैरव शब्द के तीन अक्षरों के ध्यान से उनके निरुक्ति स्वरूप को सुस्पष्ट परिचय मिलता है, क्योंकि ये तीनों शक्तियाँ उनके समाविष्ट हैं 'भ' अक्षरवाली जो भैरव मूर्ति है वह श्यामला है, भद्रासन पर विराजमान है तथा उदय कालिक सूर्य के समान सिंदूरवर्णी उसकी काँति है। वह एक मुखी विग्रह अपने चारों हाथों में धनुष, बाण वर तथा अभय धारण किए हुए है। 'भ' अक्षरवाली भैरव मूर्ति श्याम वर्ण है। उनके वस्त्र लाल हैं। सिंह पर आरूढ़ वह पंचमुखी देवी अपने आठ हाथों में खड्ग, खेट (मूसल), अंकुश, गदा, पाश, शूल, वर तथा अभय धारण किए हुए है। 'व' अक्षरवाली भैरव शक्ति के आभूषण और नरवरफाटक के सामान श्वेत हैं। वह देवी समस्त लोकों का एकमात्र आश्रय है। विकसित कमल पुष्प उनका आसन है। वे चारों हाथों में क्रमशः दो कमल, वर एवं अभय धारण करती हैं। स्कंदपुराण के काशी- खंड के 31वें अध्याय में उनके प्राकट्य की कथा है। गर्व से उन्मत्त ब्रह्माजी के पांचवें मस्तक को अपने बाएँ हाथ के नखाग्र से काट देने पर जब भैरव ब्रह्म हत्या के भागी हो गए, तबसे भगवान शिव की प्रिय पुरी 'काशी' में आकर दोष मुक्त हुए। ब्रह्मवैवत पुराण के प्रकृति खंडान्तर्गत दुर्गापाख्यान में आठ पुण्य निर्दिष्ट हैं- महाभैरव, संहार भैरव, अस्तितांग भैरव, रूद्र भैरव, काल भैरव, क्रोध भैरव, ताम्रचंद्र भैरव, चंद्रचंद्र भैरव। लेकिन इसी पुराण के गणपति- खंड के 41वें अध्याय में अष्टभैरव के नामों में सात और आठ क्रमांक पर क्रमशः कपालभैरव तथा रुद्र भैरव का नामोल्लेख मिलता है। तंत्रसार में वर्णित आठ भैरव अस्तितांग, रूद्र, चंड, क्रोध, उन्मत्त, कपाली, भीषण संहार नाम वाले हैं। भैरव कलियुग के जागृत देवता हैं। शिव पुराण में भैरव को महादेव शंकर का पूर्ण रूप बताया गया है। इनकी आराधना में कठोर नियमों का विधान भी नहीं है। ऐसे परम कृपालु एवं शीघ्र फल देने वाले भैरवनाथ की शरण में जाने पर जीव का निश्चय ही उद्धार हो जाता है। भैरव के नाम जाप मात्र से मनुष्य को कई रोगों से मुक्ति मिलती है। वे संतान को लंबी उम्र प्रदान करते हैं। अगर आप भूत-प्रेत बाधा, तांत्रिक क्रियाओं से परेशान हैं, तो आप शनिवार या मंगलवार कभी भी अपने घर में भैरव पाठ का वाचन कराने से समस्त कष्टों और परेशानियों से मुक्त हो सकते हैं। जन्मकुंडली में अगर आप मंगल ग्रह के दोषों से परेशान हैं तो भैरव की पूजा करके पत्रिका के दोषों का निवारण आसानी से कर सकते हैं। राहु केतु के उपायों के लिए भी इनका पूजन करना अच्छा माना जाता है। भैरव की पूजा में काली उड़द और उड़द से बने मिष्ठान इमरती, दही बड़े, दूध और मेवा का भोग लगाना लाभकारी है इससे भैरव प्रसन्न होते हैं। भैरव की पूजा-अर्चना करने से परिवार में सुख-शांति, समृद्धि के साथ-साथ स्वास्थ्य की रक्षा भी होती है। तंत्र के ये जाने-माने महान देवता

कालाष्टमी, कालभैरव अष्टमी आज ॐ श्री कालभैरवाय नमः



श्री कालभैरव अष्टमी

विविध विशेष

'वंदे मातरम' पर विमर्श !

डॉ.बालमुकुंद पांडेय

लंछनमंडे सोवें वर्षते जव भारत औपनिवेशिक दासता के अंधकार में डूबा हुआ था, तब बलिकेन्द्र चट्टोपाध्याय ने अपने अग्रव्यस आनंदभट में “वंदे मातरम” की रचना की। यह केवल एक गीत नहीं था बल्कि वह भावनात्मक शक्ति द ऊर्जा थी जिन्होंने गुलाम भारत को अपनी माता, अपनी पद्यान और अपने स्वाभिमान से फिर जोड़ा।1870 के दशक में रचित यह गीत स्वतंत्रता संग्राम के साथ-साथ चलता हुआ आज १1वीं सदी के भारत की संसद तक आ पहुँचा है।8 दिसंबर, २0१5 को लोकसभा में “वंदे मातरम” के 150 वर्ष पूरे होने पर हुई विशेष बहस ने यह स्पष्ट कर दिया कि यह रचना आज भी केवल इतिहास से नहीं बल्कि समकालीन भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक भावना का उद्घोषणऔर राष्ट्रवन्देना का जीवंत प्रतीक बनी हुई है। गुलामी के दौर में “वंदे मातरम” का उद्घोष केवल भावनात्मक नारा नहीं था बल्कि वह औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध सांस्कृतिक प्रतिरोध का स्वर था। ताला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, अरविंदो घोष,केशव बलिराम डेवनेवार, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, दिपिनचंद्र पाल जैसे नेताओं ने इसे जन-जन की घेतना से जोड़ा।"सुभाषत मुफ्तला"मलयज शीतला" के माध्यम से भारत केवल एक भू-भाग नहीं बल्कि एक जीवित माता के रूप में प्रस्तुत हुआ।रवींद्रनाथ ठाकुर ने टीक ही कश था कि इस गीत में भारत की आत्मा बोली है। इसीलिए यह गीत केवल राजनीतिक क्रांति नहीं बल्कि"सांस्कृतिक पुनर्जागरण" का प्राधार बना। आज जब संसद में इस गीत को लेकर तीव्री बहस हुई, तो व

केवल अतीत की व्याख्या पर नहीं, बल्कि वर्तमान राष्ट्रबोध और भविष्य की दिशा पर भी केंद्रित थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कांग्रेस पर आरोप लगाया कि 19३7 के कालखंड में “वंदे मातरम” के कुछ अंशों को राजनीतिक दबाव में रद्दकर राष्ट्रवन्देना को खंडित किया गया।विपक्ष ने इसे इतिहास को अपने अनुकूल मोड़ने का प्रयास बताया। कांग्रेस, समाजवादी पार्टी और डीएलके के नेताओं ने यह तर्क दिया कि इस गीत को विभाजनकारी राजनीति से अलग रखकर राष्ट्रीय एकता के प्रतीक के रूप में देखा जाना चाहिए। यह टकराव दरअसल इस बात का संकेत है कि “वंदे मातरम” आज भी राजनीतिक बहस के केंद्र में है और इसकी व्याख्या को लेकर राष्ट्र की वैचारिक दिशा तय करने की कोशिशें जारी है। 'वंदे मातरम' को लेकर मुंबिका उस आर्यावर्षाया का संकेत राजनीति गुरु लेती का रही थी। मोल्म्बद अती जिम्बाने तखनऊ से 15 अक्टूबर, 19३7 को 'वंदे मातरम' के रिखलाफ नारा बुतुंद किया। कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष पीडित जवाहलाल नेहरु को अपना सिंहासन डोलता दिखा, मुस्लिम लीग के आधाराहीन दावों को कराया जवाब देते, इसके अला उम्बेन' वंदे मातरम' की पड़ताल गुरु कर दी।" यह बहस ऐसे समय में हुई है जब भारत 'विकसित भारत, २047' की ओर कदम बढ़ाने का संकल्प दोहरा रहा है।आज का भारत केवल मानवात्मक राष्ट्रवाद से नहीं, बल्कि नीति, तकनीक, सुरक्षा और वैश्विक भूमिका से भी ख्यातिले रहे रा है। संसद में जब डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया, स्टार्टअप, रक्षा, आर्थिकनिर्भरता, सीमाओं की सुरक्षा और सामाजिक न्याय जैसे विषयों पर चर्चा होती है तो वह आधुनिक भारत के रूप

स्वरूप को रेखांकित करती है, जिसमें विकास और राष्ट्र-बोध साथ-साथ चल रहे हैं। इस संदर्भ में “वंदे मातरम” केवल अतीत का गीत नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की प्रेरणा भी बनता दिखाई देता है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में उभरा राष्ट्रवाद स्वयं को सांस्कृतिक और धिकासोन्मुख राष्ट्रवाद के रूप में प्रस्तुत करता है। “वंदे भारत” ट्रेन, जल जीवन मिशन, हर घर नल योजना, डिजिटल मुगताम प्रणाली, स्वदेशी रक्षा उत्पादन और अंतरिक्ष अभियानों को इस सोच के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। “वंदे मातरम” का “मुजला—सुफुला” आज जल संरक्षण, कृषि सुधार और हरित ऊर्जा के नए संदर्भों में व्याख्यापित किया जा रहा है। चंद्रयान, गगनयान और अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत की बढ़ती भूमिका उस आर्यावर्षाया का संकेत है जिसे स्वतंत्रता संग्राम के समय इस गीत ने जन्म दिया था। हालाँकि “वंदे मातरम” की समकालीन व्याख्या को लेकर असहमति भी उत्पनी है गहरी है। एक पक्ष इसे सांस्कृतिक एकता और राष्ट्रगौरव का प्रतीक मानता है, तो दूसरा पक्ष इसके राजनीतिक उपयोग पर सवाल उठाता है। यह बहस अपने आप में भारतीय लोकतंत्र की जीवंतता का प्रमाण है, जहाँ प्रतीकों की व्याख्या भी खुली बहस के दायरे में लेती है। संसद की सलिया बहस ने यह साफ कर दिया कि राष्ट्रभक्ति की अभिव्यक्ति के तरीकों पर मतभेद हो सकते हैं, लेकिन राष्ट्र की एकीकरण से कोई विकृष्ट नहीं है। आज भारत की वैश्विक भूमिका भी “वसुधैव कुटुंबकम” की सोच से जुड़ी दिखाई देती है। इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में बढ़ती सक्रियता, रूस-यूक्रेन संकट में संतुलित कृतनीति, जी-२0

की अध्यक्षता और वैश्विक आर्थिक गंघों पर भारत की भूमिका—ये सभी उस आर्यावर्षाया भारत की छवि निर्मित करते हैं जो अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े हैं, लेकिन वैश्विक जिम्मेदारियों से भी पीछे नहीं हटता। इस दृष्टि से “वंदे मातरम” केवल राष्ट्रीय नहीं, बल्कि वैश्विक नीतिकता से भी जुड़ता है। “विकसित भारत २047” का लक्ष्य केवल आर्थिक उन्नति तक सीमित नहीं है। यह सामाजिक समरसता, तकनीकी नवाचार, पर्यावरण संरक्षण और सांस्कृतिक घेतना के संतुलन का भी संकेल्य है। स्पष्ट भारत अभिमान, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, हरित ऊर्जा, नेट-जीरो २070 का लक्ष्य और एक फुई नई के नाम जैसे कार्यक्रम इसी व्यापक दृष्टि का हिस्सा हैं। इन सभी प्रयासों में “वंदे मातरम” की वह भावना अंतर्निहित है जिसमें मातृभूमि की सेवा सर्वोच्च कर्तव्य मानी जाती है। सवाल यह है कि क्या “वंदे मातरम” आज भी उसी तरह एकजुट करने वाली शक्ति बना रह सकता है, जैसे वह स्वतंत्रता के आरोप-प्रत्यारोप, वैचारिक संघर्ष और राजनीतिक मतभेदों के बावजूद यह स्पष्ट है कि राष्ट्र की केंद्रीय अकधारणा सभी राजनीतिक धाराओं के लिए अभी भी अपरिखर्ष बनी हुई है। इसी अर्थ में “वंदे मातरम” एक सांस्कृतिक धरोर के साथ-साथ एक जीवत राजनीतिक प्रतीक भी है। डेढ़ सौ वर्षों की यात्रा के बाद “वंदे मातरम” जिस मोड़ पर खड़ा है, वहाँ वह केवल स्मृति का विषय नहीं, बल्कि सतत पुनर्व्याख्या की गंग भी करता है। यह गीत ल्मं वाद दिलाता है कि राष्ट्र केवल भौगोलिक सीमा नहीं, बल्कि साझा घेतना, साझी जिम्मेदारी और सामूहिक भविष्य का नाम है। संसद में

हुई बहस ने यह भी स्पष्ट किया कि राष्ट्रभेग की भावना आज भी उत्पनी है प्रबल है, भले ही उसके स्वर और रूप बदल गए हों। भारतीय कांग्रेस के 1896 के अधिवेशन में रविंद्र नाथ टैगोर ने गीत को स्वर दिया। फिर, 7 अगस्त, 1905 को बंगाल विभाजन के विरुद्ध कोलकाता के टाउन हॉल में बरिष्कार समा में इसे गाया गया था। दिसंबर,1905 में कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक में ‘वंदे मातरम’ को राष्ट्रगीत का दर्जा मिला। अरविंदो घोष ने गीत का अंग्रेजी में अनुवाद किया एवं केरल के राज्यपाल गोल्म्बद आरिफ खान(वर्तमान बिहार के तत्कालीन संयुक्त प्रशासिणीक गवर्नर (यूपीए) सरकार में खर्षागर्भों में लिखा था ‘वंदे मातरम’।सितंबर, 1909 में पेरिस में वंदे मातरम का सभ्य किण्ण मेडन मीकाजी कामा द्वारा स्थापित “पेरिस इंडियन सोसाटी” में नदन लाल ठींगरा के फांसी के घिरे के साथ किया था। 14 अगस्त, 1947 की रात्रि में सैंकियन सभा की पस्ली बैठक का आरंभ ‘वंदे मातरम’ एवं समापन ‘ जन गण मन’ के साथ हुआ था।15 अगस्त, 1947 को प्रातः 6:३0 बजे आकाशवाणी से पीडित आंकर नाथ ठाकुर के राग(स्वर) में गान ‘वंदे मातरम’ के गायन का सीधा प्रसारण किया था। ११ जनवरी, 1950 को ‘वंदे मातरम’ राष्ट्रीय गीत एवं ‘

गण मन’ राष्ट्रीय गान बना था।115 सितंबर, 1959 में दूरदर्शन प्रारंभ हुआ, तब से सुबह की शुरुआत ‘वंदे मातरम’ से होती रही है। सन् २0१5 में ‘वंदे मातरम’ के 150 वर्ष पूर्ण होने पर देश भर में विशेष आयोजन और सामूहिक गायन हुआ, जिसमें आकाशवाणी की भूमिका महत्वपूर्ण रही। वर्तमान में भी दूरदर्शन पर ‘वंदे मातरम’ की धुन बजती है। राष्ट्रीय उत्सव, स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस पर दूरदर्शन ने ‘वंदे मातरम’ की नई और सुंदर प्रस्तुत की है जो राष्ट्रभक्ति की भावना को प्रबल करती है। वर्ष, २00१ में वीबीसी वर्ल्ड सर्विस में वैश्विक स्तर के सबसे लोकप्रिय 10 गीतों की घुनने के लिए एक अंतराजान सर्वेक्षण कराया था, इसमें वैश्विक स्तर के 150 देशों के इंटरनेट यूजर्स ने ‘वंदे मातरम’ को दूसरा सबसे लोकप्रिय गीत चयनित किया था। सन्, २005 में वंदे मातरम के 100 वर्ष पूरे होने पर वर्षभर समारोह हुआ था।17 सितंबर, २006 को समारोह के समापन पर मानव संसाधन मंत्रालय (अब केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय) ने गीत को विद्यालयों में गाने पर जोर दिया लेकिन विरोध होने पर तत्कालीन संयुक्त प्रशासिणीक गवर्नर (यूपीए) सरकार ने कहा कि, "यह अनिवार्य नहीं, स्पेक्ष्य पर निर्भर करता है।" आज जब भारत दिवद गंध पर अपनी नई पद्यान गढ़ रहा है, तब यह आश्चर्य है कि “वंदे मातरम” को केवल राजनीतिक लक्षियार नहीं, बल्कि राष्ट्रीय प्राणा के प्रतीक के रूप में देखा जाए। यही इसकी सबसे बड़ी प्रासिक्तता है—तब भी, अब भी और आने वाले समय में भी।

राष्ट्रीय संगठन सचिव, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना संदेवालय, नई दिल्ली।

पर्यावरण पाठशाला : 2026 में बदलाव की दिशा — 2025 से सीख और स्वयं बदलाव बनने का संकल्प

— डॉ. अंकुर शरण

2025 ने हमें प्रकृति के साथ अपने रिश्ते को लेकर कई कड़वी लेकिन जरूरी सीख दी। बढ़ते प्रदूषण, लगातार कटते पेड़, सूखते जलस्रोत, बेपरवाह प्लास्टिक उपयोग और जलवायु असंतुलन ने साफ संकेत दे दिया कि अब सिर्फ बातों से काम नहीं चलेगा। हमें सोच से आगे बढ़कर आचरण में बदलाव लाना होगा। 2026 वह वर्ष होना चाहिए, जब हर नागरिक “पर्यावरण प्रहरी” बने, न कि केवल दर्शक। 2025 से हमने यह सीखा कि जब तक हम छोटे स्तर पर जिम्मेदारी नहीं निभाएंगे, बड़े बदलाव संभव नहीं होंगे। कचरा अलग-अलग करना, पैगल यूज प्लास्टिक छोड़ना, पानी-बिजली की बचत, सिंगल लगाकर उन्हें जीवित रखना, और सार्वजनिक स्थलों पर स्वच्छता बनाए रखना — ये सब कोई सरकारी अभियान नहीं, बल्कि हमारी दैनिक आदतें बननी चाहिए। 2026 में हमें बदलाव खुद बनना होगा। दूसरों को उपदेश देने से बेवतर्क है कि हम खुद उदाहरण प्रस्तुत करें। अपने घर से शुरुआत करें — छत पर पौधे लगाएं, पानी-संचयन अपनाएं, बच्चों को प्रकृति से जोड़ें, पक्षियों के लिए दाना-पानी रखें और स्थानीय



पर्यावरण पाठशाला का यही उद्देश्य है — सीखना, समझना और जमीन पर उतरकर कुछ करना। जब हर व्यक्ति यह कहेगा — “मैं बदलाव बनूंगा”, तभी समाज बदलेगा और प्रकृति को नया जीवन मिलेगा। 2026 का संकल्प यही हो — पेड़ों के साथी बनें, धरती के प्रहरी बनें, और वह बदलाव बनें, जो हम दुनिया में देखना चाहते हैं। — डॉ. अंकुर शरण पर्यावरण पाठशाला

गोवा हादसा: झुलसती संवेदनाएं और नाकाम होती व्यवस्था

ललित गर्ग

गोवा अपनी पहचान पर्यटन से बनाता है। नाइट लाइफ, समुद्री तटों का आनंद, मनोरंजन गतिविधियां और विदेशी पर्यटक इसका स्वाभाविक आकर्षण हैं। ऐसे प्रदेश में इस प्रकार का हादसा केवल मानवीय त्रासदी नहीं, बल्कि छवि और अर्थव्यवस्था का गहरा नुकसान भी है। भारत की टूरिज्म इंडस्ट्री पहले ही प्रतिस्पर्धा और सुरक्षा को लेकर चुनौतियों से जूझ रही है। एक बार फिर एक भीषण आग ने 25 मासूम जिंदगियों को छीन लिया। गोवा के नाइट क्लब में हुई यह त्रासदी केवल आगजनी नहीं, बल्कि हमारे सिस्टम की जड़ता, गैर-जिम्मेदारी और नैतिक पतन की ज्वलंत मिसाल है। गोवा का जो नाइट क्लब आग की चपेट में आया था, उसमें आग से बचाव के उपाय भी नहीं किए गए थे। रही-सही कसर इससे पूरी हो गई कि नाइट क्लब में आने और जाने का रास्ता बेहद संकरा था। आग की चपेट में आने वालों की संख्या इसलिए अधिक बढ़ गई, क्योंकि बचने के लिए उन्होंने जिस रास्ते को सुरक्षित समझा, वहां पहले से ही लोग फसे हुए थे। इस तरह से आनंद और उत्सव का स्थल अचानक जीवन समाधि में बदल गया, वह अनेक सवाल हमारे सामने खड़े करता है, क्या हम सीखने की क्षमता खो चुके हैं? क्यों हर हादसे के बाद जांच समितियां बनती हैं, मुआवजा घोषित होता है, कुछ दिन हंगामा होता है और फिर सेंटर-लापरवाही की आग में झुलसतों वालों की संख्या बढ़ी है, लेकिन हमारी संवेदनशीलता का स्तर छोटा धारा जा रहा है। आगजनी की घटनाओं का सिलसिला तो लगातार है, परंतु सुरक्षा मानकों के प्रति हमारी उदासीनता और घोर लापरवाही भी उतनी ही स्थायी है। यह बात स्पष्ट है कि हादसे किसी तकनीकी गलती का परिणाम बर नहीं, बल्कि भ्रष्टाचार और राजनीतिक मिलीभगत की देन हैं। गोवा अपनी पहचान पर्यटन से बनाता है। नाइट लाइफ, समुद्री तटों का आनंद, मनोरंजन गतिविधियां और विदेशी पर्यटक इसका स्वाभाविक आकर्षण हैं। ऐसे प्रदेश में इस प्रकार का हादसा केवल मानवीय त्रासदी नहीं, बल्कि छवि और अर्थव्यवस्था का गहरा नुकसान भी है। भारत की टूरिज्म इंडस्ट्री पहले ही प्रतिस्पर्धा और सुरक्षा को लेकर चुनौतियों से जूझ रही है। यह घटना विश्व के सामने एक सवाल बनकर खड़ी है—क्या भारत सुरक्षित पर्यटन देश है? क्या यहां गैर-जिम्मेदाराना ढांचे और भ्रष्ट तंत्र के बीच किसी का जीवन सुरक्षित रखा जा सकता है? इस प्रकार के हादसों में दो बड़े चरित्र सामने आते हैं—सरकार की सुस्ती और आयोजकों की लालचपूर्ण मनसिबताएं। अधिकांश नाइट क्लब, बार, पार्क या मनोरंजन स्थल ऐसे होते हैं जहां प्रवेश शुल्क, अवैध संचालन और आर्थिक लाभ का बड़ा खेल चलता है। इमारतों की मंजूरी, फायर सुरक्षा की अनुमति, बिजली के तारों का रखरखाव, निकास मार्ग-ये

सभी चीजें फाइलों में तो दर्ज होती हैं, लेकिन जमीन पर गायब रहती हैं। प्रशासनिक अधिकारियों की सजगता की जगह ‘संबंध’ और ‘सुविधा शुल्क’ काम करता है। निरीक्षण के नाम पर औपचारिकता ढहती है और बीते हुए हादसे केवल याद बनकर रह जाते हैं।

नाइट क्लब तक पहुंचने का रास्ता इतना संकरा है कि फायर ब्रिगेड की गाड़ियों को 400 मीटर दूर खड़ा होना पड़ा। सजावट के लिए ताड़ के सूखे पत्तों का इस्तेमाल किया गया था, जिसने आग और धड़कादी भी डीढ़बाड़ वाली जगहों पर एंटी से ज्यादा महत्वपूर्ण इमरजेंसी एग्जिट पॉइंट्स होते हैं, लेकिन इस क्लब में लगाता है कि इसकी भी कोई व्यवस्था नहीं थी, जिससे कई लोग भटक कर किचन में पहुंच गए, जहां से बाहर निकलने का रास्ता नहीं था। यह नाइटक्लब बिना मंजूरी के चल रहा था। लोकल अर्थराटी के मुताबिक, निर्माण अवैध था। सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि आखिर हम हादसों को नियंत्रित क्यों मान लेते हैं? हर घटना के बाद नेताओं के बयान आते हैं—“दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा”, “उच्च स्तरीय जांच की जाएगी”, “मुआवजा दिया जाएगा”, लेकिन क्या कभी हमने दोषियों को सजा होते देखा है? कभी किसी अधिकारी को बर्खास्त होते देखा है? क्या किसी क्लब या होटल की अनुमति स्थायी रूप से रद्द की गई? जवाब अधिकतर ‘नहीं’ है। यही वह सत्य है जो बताता है कि हमारा समाज हादसे को दुख तो मानता है पर समस्या नहीं मानता। अजीब विडंबना यह है कि हादसे के शिकार गरीब या आम नागरिक होते हैं, लेकिन इस त्रासदी से गुजरी व्यवस्थाओं को कोई चोट नहीं लगती। वे फिर उठते हैं, नए सजावटी बोर्ड लगा लेते हैं और जनता को फिर से आकर्षित कर लेते हैं। व्यवस्था में भ्रष्टाचार और मानव-मूल्यों का हास दोनों मिलकर ऐसे घटनाओं को जन्म देते हैं। यह केवल प्रशासनिक नाकामी नहीं, बल्कि सामूहिक नैतिक कामजोर पर निशान देखाता है; समाज घटना को क्षणिक दुख समझकर भूल जाता है। वैश्विक स्तर पर देखें तो किसी भी विकसित या उत्तरदायी समाज में जन-स्थलों पर सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता होती है। नियमित निरीक्षण, कठोर दंड, मानकों का अनिवार्य पालन और पारदर्शिता बुनियादी तत्व हैं। भारत में ये मानक केवल कारनीटल पुस्तकों में रहते हैं। सवाल यह नहीं कि हादसे क्यों होते हैं, सवाल यह है कि सीख क्यों नहीं ली जाती। गोवा का यह हादसा एक चेतावनी है, अकेले गोवा के लिए नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए। हम विकास, पर्यटन और आधुनिक जीवन के बावत करते हैं, लेकिन सुरक्षा, नियंत्रण और मानवीय संवेदनशीलता को हाशिए पर छोड़ देते हैं। यह घटना बताती है कि यदि व्यवस्था की लापरवाही और लालच के बीच नागरिक की सुरक्षा कुचलती रही तो हम आधुनिक ढांचे बनाकर भी असुरक्षित रहेंगे। किसी भी राष्ट्र की उन्नति उसके नागरिकों की सुरक्षा पर टिकी होती है, न कि केवल चमक-दमक पर।

(व्यंग्य-आलेख : संजय पराते)

डॉलर चढ़ रहा है और रुपया लुढ़क रहा है। रूपये के चढ़ने से डॉलर लुढ़के या न लुढ़के, लेकिन अर्थशास्त्र की भाषा में, डॉलर के चढ़ने का अर्थ ही रुपए का लुढ़कना होता है। तो मित्रों, आज की बासी खबर यह है कि डॉलर चढ़ रहा है और रुपया लुढ़क रहा है। पिछले 11 साल से रुपया लुढ़क रहा है। मोदी सरकार की पूरी कोशिश के बावजूद, रुपया लुढ़क रहा है। पिछले 11 सालों में आया ऐसा कोई दिन याद नहीं आता, जब रुपया लुढ़कने की बजाय चढ़ा हो। लुढ़कते-लुढ़कते उसने 90 की सीमा पार कर ली है। अर्थशास्त्री कह रहे हैं कि फिलहाल तो इसे ही अच्छे दिन मानो भाई, और उन दुर्दिनों की कल्पना करो, जब यह लुढ़कते-लुढ़कते 100 की सीमा पार कर जाएगा।

2013-14 की बात है। उस समय प्रधानमंत्री कोई मौन-से व्यक्ति मनमोहन सिंह थे। रुपया तब भी लुढ़क रहा था। लुढ़कते-लुढ़कते 58 की सीमा पार कर गया था। बड़ी फिरकिरी हो रही थी, लेकिन न डॉलर को दया आई और न रुपये को। न डॉलर ने चढ़ना बंद किया, न रुपया ने लुढ़कना। हां, इन-कॉमिंग प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जरूर चढ़ बैठे। उनका आरोप था, रुपया अस्थायतल में है, आईसीयू में भर्ती है। जनता ने रुपया को आईसीयू से निकालने के लिए पूरा जोर लगा दिया, क्योंकि रुपया देश की इज्जत का प्रतीक है। रूपये का लुढ़कना देश की इज्जत का गिरना था, देश की इज्जत का गिरना जनता के स्वाभिमान का मिट्टी में मिलना था। पाकिस्तान को मिट्टी में मिलाने वाली जनता को यह स्वीकार नहीं था। रूपये को बचाने की खातिर उन्होंने मनमोहन को लुढ़का दिया। मोदी सत्ता में चढ़ गए, लेकिन रुपए का लुढ़कना जारी रहा।

हिंदू आस्था का मान रखने वाले जन के खिलाफ पूरे विपक्ष का एकजुट होना चिंताजनक मिसाल है

नीरज कुमार दुवे

तिरुप्परनकुंडम का दीपधन विवाद केवल एक धार्मिक अनुष्ठान का मामला नहीं रह गया है; यह प्रशासनिक निष्पक्षता, न्यायपालिका की स्वतंत्रता और धर्मीयपेक्षा के नाम पर ये रही राजनीति की वास्तविकता का आईना बन चुका है। हिंदू-बहुल भारत में आखिर यह स्थिति क्यों पैदा हो गई है कि किसी हिंदू को अपने ही प्राचीन धर्मस्थल पर दीपक जलाने या पूजा करने के लिए अदालत से अनुमति लेनी पड़े? यह स्थिति आखिर क्यों पैदा हो गयी है कि न्यायपालिका को भी परंपराओं और प्रथाओं के प्रति संवेदनशील होना पड़े? क्या यह लोकतांत्रिक व्यवस्था का स्वाभाविक दृश्य है? सवाल उठता है कि तुष्टिकरण की राजनीति की आड़ में हिंदू आस्था को बार-बार क्यों चोट पहुंचायी जाती है? क्या बहुरसंख्यक धर्म की परंपराएं केवल इसलिए संदेह के घेरे में हैं क्योंकि कुछ राजनीतिक दल अपने बीच के राजनीति को धर्म और इतिहास से ऊपर रख चुके हैं? और क्या अब न्यायपालिका तक को इस आधार पर निशाना बनाया जाएगा कि उसका निर्णय किसी समुदाय को राजनीतिक रूप से असुविधाजनक लगा? इन नूतन प्रश्नों के बीच तिरुप्परनकुंडम का दीपधून विवाद केवल एक धार्मिक अनुष्ठान का मामला नहीं रह गया है; यह प्रशासनिक निष्पक्षता, न्यायपालिका की स्वतंत्रता और धर्मीयपेक्षा के नाम पर ये रही राजनीति की वास्तविकता का आईना बन चुका है। (स्म प्राक्यो बता दें कि मट्टे के तिरुप्परनकुंडम कला प्रमाणिक रूप से स्वामी मंदिर और उससे सटे “दीपधून” (पूज्य के दीप-स्तंभ) पर दीप प्रज्वलन को लेकर उठा विवाद लगातार कानूनी और राजनीतिक टकराव का रूप लेता जा रहा है। नदरास उच्च न्यायालय की नदुरी पीठ द्वारा “दीपधून” पर दीप जलाने की अनुमति देने के बाद राज्य सरकार ने न केवल इस आदेश को चुनौती दी बल्कि जिला प्रशासन ने भी पर्वत की तलहटी पर ही श्रद्धालुओं को रोक दिया। इस घटना ने न्यायपालिका और राज्य सरकार के बीच तनाव को सार्वजनिक रूप से उद्घाटित कर दिया।

स्म प्राक्यो बता दें कि 1 दिसंबर को न्यायमूर्ति जीआर स्वामीनाथन ने हिंदू तमिल कव्ची के संस्थापक राम रविंदकुमार की याचिका पर आदेश देते हुए भक्तों को तिरुप्परनकुंडम पराड़ी पर स्थित दीपधून पर दीप जलाने की अनुमति दी थी। लेकिन 3 दिसंबर के कार्निर्गद दीपधन उत्सव के दिन प्रशासन ने उन्हें रोक दिया जिसके बाद रविंदकुमार ने अद्वानाना याचिका दायर की। उसी दिन न्यायमूर्ति स्वामीनाथन ने दस भक्तों को दीपधून तक जाने और वहाँ दीप प्रज्वलित करने की अनुमति दी तथा उनकी सुरक्षा के लिए सीआईएसएफ कर्मा प्रदान करने का निर्देश दिया। इसके बावजूद पुलिस ने समूह को रोक दिया और राज्य सरकार ने अद्वानाना कार्यवाही से बचने के लिए उद्वतन न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। स्म प्राक्यो बता दें कि इस मामले की जड़ लगभग सौ वर्ष पुरानी है। तिरुप्परनकुंडम पराड़ी, जो भगवान मुचुनन के छह प्रमुख पवित्र स्थलों (अरुपयई वीड़ुकु) में से एक है, वहां पर स्थित मंदिर और एक दरगाह के बीच 19२0 से ही स्वामिनी और धार्मिक अधिकारों को लेकर विवाद रहा है। उस समय सिविल कोर्ट और बाद में प्रिवी काउंसिल ने पराड़ी को मंदिर स्थिति घोषित किया था। किंतु दीप प्रज्वलन की परंपरा को लेकर न्यायालय ने 1996 में यह कस था कि पारंपरिक स्थान मंदिर परिसर का अधिकारिता कोविद मंड्यम है, हालांकि भविष्य में किसी संविधिक स्थान पर दीप प्रज्वलन की अनुमति HR&CE विभाग द्वारा दी जा सकती है, बशर्त यह दरगाह से दूर हो। इसके बाद भी दीपधून को पारंपरिक स्थल बनाकर कई याचिकाएं दायर हुईं, जिन पर २014 और २017 में उच्च न्यायालय ने यह दोहराया था कि मंदिर प्रबंधन से धार्मिक परंपराओं और प्रथाओं का निर्वाहन करना। लेकिन जिन में बार-बार पुनः इस विवाद ने जोर पकड़ा और राजनीतिक रंग ले लिया। राज्य सरकार ने उद्वतन न्यायालय और उच्च न्यायालय की खंडीठ में अपील दायर कर दी है। वहीं 5 दिसंबर को खंडपीठ ने मंदिर प्रबंधन का पक्ष रखते हुए यह फैसला दिया कि न्यायपालिका का अग्रगण्य कर्तव्य है। दिव्यगियों को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इसके बाद 9 दिसंबर को अदालत ने तमिलनाडु के मुख्य सचिव और एडीजीपी (कानून-व्यवस्था) को 17 दिसंबर को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से उपस्थित होने का आदेश दिया,

क्योंकि प्रशासन ने न्यायालय के पूर्व आदेशों का पालन नहीं किया। दूसरी ओर, यह विवाद इसी बीच संसद तक पहुंच गया है। कांग्रेस, डीएलके, समाजवादी पार्टी, एनसीपी (एसपी) और AIMIM से संबद्ध 17 विधायकों ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को नदरास उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति स्वामीनाथन को हटाने का प्रस्ताव सौंपा। आरोप लगाया गया कि न्यायाधीश ने एक विशेष राजनीतिक विचारधारा से प्रभावित होकर निर्णय दिए और निष्पक्षता व धर्मीयपेक्षा पर प्रश्नचिह्न लगाया है। देखा जाये तो विपक्ष का यह कदम अपने आप में एक बड़ा राजनीतिक टकराव बन चुका है, क्योंकि इसे न्यायपालिका पर सीधे प्रहार के रूप में देखा जा रहा है। जिस प्रकार से विपक्षी दलों ने न्यायाधीश के निर्णय से असहमति को आधार बनाकर उन्हें हटाने का प्रस्ताव दिया, वह भारतीय लोकतंत्र में अग्रभूत एक र्विंताजनक मिसाल है। सबसे पहले यह समझना आवश्यक है कि तिरुप्परनकुंडम पराड़ी का इतिहास केवल मंदिर-प्रशासन से जुड़ा मामला नहीं है, बल्कि यह हिंदू आस्था का एक महत्वपूर्ण केंद्र है जो डीएलके और उसके संबन्धियों की राजनीति में बार-बार सिविल डिक्ली और प्रिवी काउंसिल के निर्णय ने स्पष्ट कस था कि परंपरिक स्थान मंदिर परिसर का अधिकारिता कोविद मंड्यम है, हालांकि भविष्य में किसी संविधिक स्थान पर दीप प्रज्वलन की अनुमति HR&CE विभाग द्वारा दी जा सकती है, बशर्त यह दरगाह से दूर हो।

वहीं प्रश्न केवल परंपरा का नहीं, बल्कि अधिकारों का है। राज्य उच्च न्यायालय का स्पष्ट आदेश मौजूद था कि भक्त दीपधून पर दीप जला सकते हैं, तब राज्य सरकार द्वारा उसे लागू न करना न केवल न्यायालय की अद्वानाना है बल्कि दूरदर्शन प्रारंभ हुआ, तब से सुबह की शुरुआत ‘वंदे मातरम’ से होती रही है। सन् २0१5 में ‘वंदे मातरम’ के 150 वर्ष पूर्ण होने पर देश भर में विशेष आयोजन और सामूहिक गायन हुआ, जिसमें आकाशवाणी की भूमिका महत्वपूर्ण रही। वर्तमान में भी दूरदर्शन पर ‘वंदे मातरम’ की धुन बजती है। राष्ट्रीय उत्सव, स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस पर दूरदर्शन ने ‘वंदे मातरम’ की नई और सुंदर प्रस्तुत की है जो राष्ट्रभक्ति की भावना को प्रबल करती है। वर्ष, २00१ में वीबीसी वर्ल्ड सर्विस में वैश्विक स्तर के सबसे लोकप्रिय 10 गीतों की घुनने के लिए एक अंतराजान सर्वेक्षण कराया था, इसमें वैश्विक स्तर के 150 देशों के इंटरनेट यूजर्स ने ‘वंदे मातरम’ को दूसरा सबसे लोकप्रिय गीत चयनित किया था। सन्, २005 में वंदे मातरम के 100 वर्ष पूरे होने पर वर्षभर समारोह हुआ था।17 सितंबर, २006 को समारोह के समापन पर मानव संसाधन मंत्रालय (अब केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय) ने गीत को विद्यालयों में गाने पर जोर दिया लेकिन विरोध होने पर तत्कालीन संयुक्त प्रशासिणीक गवर्नर (यूपीए) सरकार ने कहा कि, "यह अनिवार्य नहीं, स्पेक्ष्य पर निर्भर करता है।" आज जब भारत दिवद गंध पर अपनी नई पद्यान गढ़ रहा है, तब यह आश्चर्य है कि “वंदे मातरम” को केवल राजनीतिक लक्षियार नहीं, बल्कि राष्ट्रीय प्राणा के प्रतीक के रूप में देखा जाए। यही इसकी सबसे बड़ी प्रासिक्तता है—तब भी, अब भी और आने वाले समय में भी।

राष्ट्रीय संगठन सचिव, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना संदेवालय, नई दिल्ली।

भारतीय भाषा दिवस : 11 दिसंबर पर विशेष प्रतिद्वंद्वी नहीं, सहोदर है भारतीय भाषाएं

भाषा मानव के उन्नत बनने की दिशा में प्रथम कदम कहा जा सकता है।

आरंभ में संकेतों की भाषा रही होगी जो कालांतर में शब्द संवाद में परिवर्तित हुई। हर परिस्थिति परिवेश एक दूसरे से अपरिचित और भिन्न था इसलिए हर मानव समूह ने अपने ढंग से कुछ शब्द संकेत बनाये। एक-दूसरे से कुछ मील से हजारों मील तक की दूरी में रह रहे समूहों द्वारा विकसित किये गये इन संकेतों और शब्दों में एकरूपता का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। अतः हर कबीले की अपनी भाषा होना स्वाभाविक है जो आज भी तथावत है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि समय के साथ लगभग सभी भाषाओं, बोलियों में परिवर्तन, परिष्कार भी जारी रहा क्योंकि हर द्वीप, महाद्वीप में केवल प्रकृति आपदाओं और परिवर्तनों से ही नहीं, अपितु मानव निर्मित परिस्थितियों और आविष्कारों को व्यक्त करने के लिए भी नये शब्द अथवा संकेत चाहिए थे। यह प्रक्रिया सतत जारी है लेकिन आज हमारा परस्पर सम्पर्क और संवाद बढ़ा है इसलिए एक-दूसरे की भाषा का प्रभाव होना स्वाभाविक है। क्षेत्र विशेष के निवासियों का अपनी बोली-भाषा से अनुराग होता ही है। यह भाव उस क्षेत्र की विशिष्ट संस्कृति के जीवन्तता की गारंटी भी है।

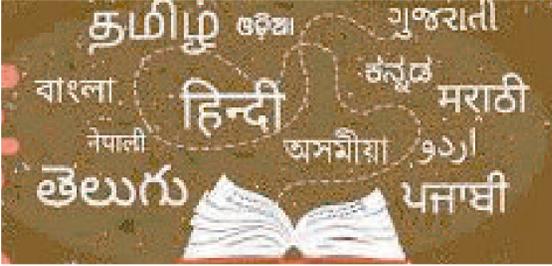
भाषा को संस्कृति की संवेदन तंत्रिका भी कहा जा सकता है। क्योंकि उससे जुड़ा हर शब्द अपने साथ एक लंबा इतिहास लेकर चलता है। विभिन्न अवसरों पर प्रयुक्त होने वाले शब्द, संवाद, गीत उस भाषा और उसे मानने वाले समाज की संस्कृति के परिचायक हैं। सांस्कृतिक भिन्नता होगी तो भाषा और उसके शब्दों और उसे अभिव्यक्त करने के ढंग में भिन्नता होना संभव है। इसलिए हर बोली अथवा भाषा महत्वपूर्ण है क्योंकि वह एक विशिष्ट संस्कृति की वाहिका है। उसका संरक्षण होना ही चाहिए। विश्व के आदि ग्रन्थ ऋग्वेद के अनुसार-

सन्तुमिव तिततना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत।

अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैर्षां लक्ष्मीनिहितवाचि।।

अर्थात् धीर पुरुष वाणी को चलनी में छने हुए सत्त्व के समान रच कर उच्चारित करते हैं। उनकी वाणी में उनका सख्य भाव ज्ञात होता है। उनकी वाणी में लक्ष्मी (पवित्र गुण) प्रतिष्ठित होती है।

हमारा सोभाय है कि हम उस भारत के



वासी हैं जो अपनी बहुगुणी भौगोलिक, सांस्कृतिक, खान-पान, रहन-सहन, आस्था, मान्यताओं की विविधताओं से समृद्ध हैं। यहां लगभग हर मौसम है। बर्फ से ढकी हिमालय की चोटियां हैं तो तपते रेगिस्तान भी हैं। तीन तरफ महासागर हैं तो पठार हैं। नदियों का जाल है। जंगल हैं। विशाल मैदान हैं। अर्थात् प्रकृति प्रदत्त विभिन्न परिस्थितियां हैं। हर दो कोस पर पानी का स्वाद बदल जाता है तो बोली भाषा के उच्चारण में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। इसीलिए हमारे देश में 1600 से अधिक बोलियां और भाषाएं हैं। विशेष यह कि भारतीय भाषाओं में मूलभूत एकता है। उच्चारण भिन्नता के बावजूद भारत भाषाओं में बहुत साम्य है। हर भारतीय के लिए सारी बोलियां-भाषाएं अपनी हैं। सदियों से हमारी संस्कृति व लोकजीवन की अविरल धारा हमारी बोलियों-भाषाओं के माध्यम से में सुरक्षित-संरक्षित रही है। संस्कृति की प्राणवायु बनकर उसे विकसित करने में जिस लोक गीतों से लोककथाओं और लोक परम्पराओं का अतुलनीय योगदान है, वे हमारी भाषायी विविधता में समाहित हैं। विशेष यह कि सभी भारतीय भाषाओं की साहित्यिक पृष्ठभूमि प्रायः समान है। संत काव्य की समान प्रवृत्ति है। हमारे संविधान की आठवीं सूची में असमिया, बंगाली, बोडो, डोगरी, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, संथाली, सिंधी, तमिल, तेलुगु और उर्दू शामिल हैं। वास्तव में भारत की सभी भाषाएं राष्ट्रीय भाषाएं हैं।

आधुनिकता के दौर में शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के लिए सम्पर्क, संवाद बढ़ा है इसलिए एक-दूसरे की भाषा सीखना परिस्थितियों की मांग है। यह सत्य है कि

किसी के लिए भी विश्व तो दूर अपने देश की सभी बोलियों-भाषाएं सीखना संभव नहीं है इसलिए एक सम्पर्क भाषा की आवश्यकता महसूस हुई। यह सत्य है कि किसी भी भाषा को सब पर थोपा नहीं जा सकता लेकिन विदेशी भाषा अंग्रेजी कभी भी सम्पर्क भाषा नहीं हो सकती।

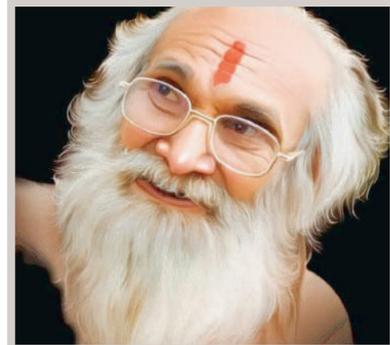
भाषा और संस्कृति की तरह भाषा एवं शिक्षा का गर्भनाल का संबंध है। एक बच्चा सर्वप्रथम अपने परिवार और परिवेश की भाषा सीखता है। अभी उसका मस्तिष्क इतना विकसित नहीं होता कि वह एक साथ अनेक भाषाएं सीख सके। इसीलिए दुनियाभर के चिंतक, शिक्षा-शास्त्री और अनुभवी शिक्षकों का मत है कि प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में ही दी जानी चाहिए। वह उस भाषा में सिखाएं हुए को बेहतर ढंग से सीखता है। जर्मनी, रूस, जापान सहित अनेक विकसित देशों में शिक्षा का माध्यम उनकी अपनी भाषा है। शिक्षाविदों और मनोवैज्ञानिकों का मत है कि परिवेश से भिन्न अथवा अपरिचित भाषा बालक की प्रतिभा को कुंठित करती है। अनेक अध्ययनों ने प्रमाणित किया है कि अंग्रेजी माध्यम से बारहवीं पास छात्रों का एक बड़ा वर्ग अपनी मातृभाषा पढ़ अथवा लिख नहीं पाता है। वे गिनती नहीं समझते। आधा तीतर, आधा बटेर बने देश के इन भावी कर्णधारों की इस दशा के लिए विदेशी भाषा में शिक्षा है।

अंग्रेजों की 'फूट डालो, राज करो' नीति से प्रभावित तथाकथित इतिहासकारों ने आर्य-द्रविड़ संघर्ष की झूठी कहानी गढ़ी कर हमारी भाषाओं को परस्पर प्रतिद्वंद्वी बनाने का प्रयास किया। राजनैतिक कारणों से कुछ लोगों ने स्वतंत्रता के पश्चात भी उत्तर एवं दक्षिण भारत की भाषाओं के बीच वैयक्तिक का वातावरण निर्मित कर जारी रखा। दुर्भाग्य की बात है कि स्वतंत्रता के बाद भी सरकारों ने

भारतीय भाषाओं के विकास, उनके संरक्षण पर जोर न देकर एक प्रकार से अंग्रेजी राज की राजकाश परम्पराओं को जारी रखा। इससे हम स्वबोध से दूर होकर पाश्चात्य सभ्यता के प्रति आकर्षित होते गये। मातृभाषा अथवा मातृभूमि की भाषा की बजाय अंग्रेजी माध्यम का प्रचलन बढ़ता जा रहा है।

सभी भारतीय भाषाओं और बोलियों में भी अंग्रेजी घुसपैठ कर रही है। हम अपने देश की भाषाओं को निकट लाने की बजाय अंग्रेजी के चंगुल में फंस रहे हैं तो इसे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है। कुछ लोग वैकल्पिक शब्दों की समस्या बताते हुए विदेशी भाषा की गुलामी का समर्थन करते हैं। ऐसे लोग समझना नहीं चाहते कि आप हिंदी, मराठी, पंजाबी, कन्नड़, तेलुगु अथवा किसी भी भाषा के हो लेकिन क्या आज आप 'दुर्लभ' का अर्थ जानते हो या नहीं? एक बंगला शब्द अखिल भारतीय हो सकता है तो जबरदस्ती घुसड़े अंग्रेजी शब्दों के स्थान पर ऐसा किया जा सकता है। यह हमारी भाषाओं-बोलियों के साथ छल है। भारतीय भाषाओं को आपस में लड़ाकर अंग्रेजी को सदा के लिए राजभाषा बनाने के उस षडयंत्र को समझना होगा।

प्रसिद्ध तमिल महाकवि और स्वतंत्रता सेनानी सुब्रमण्यम भारती हिंदी सहित भारतीय भाषाओं के उन्नयन के लिए प्रयत्नशील रहे। तमिलनाडु से चलकर वाराणसी में शिक्षा ग्रहण करने वाले उस महाकवि ने राष्ट्रवाद की भावना से भ्रूत-प्रोत ज्वलंत गीत रचकर हम सभी को आपसी मनभेद भूल सशक्त भारत के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहने के लिए प्रेरित किया। यह प्रसन्नता की बात है कि 11 दिसंबर को सुब्रमण्यम भारती जी के जन्मदिन को भारतीय भाषा दिवस के रूप में मनाया जाता है। सुब्रमण्यम भारती जी की भावना के अनुरूप भाषाई सदभाव को बढ़ावा दते हुए भारतीय भाषाओं की विविधता को विरोधाभास नहीं, समृद्धि मानते हुए भारतीय भाषा दिवस को उत्सव के रूप में मनाया जाए। वास्तव में भारत की सभी भाषाएं राष्ट्रीय भाषाएं हैं। भारतीय भाषा दिवस के अवसर पर हम सभी को हिंदी सहित भारतीय भाषाओं के सम्मान की रक्षा के लिए संकल्पित होना चाहिए। यह प्रसन्नता की बात है कि नई शिक्षा नीति में प्राथमिक कक्षाओं तक मातृभाषा को अनिवार्य बनाया गया है।



*** आज दिनांक 11 दिसंबर निमाड अंदल के महान संत सियाराम बाबा***
प्रथम पुण्यतिथि पर विशेष
कर्म भूमि को छोड़ गए इस जग से,
प्रभु धाम में चले गए!
पुण्य किए धरा पर हरि धाम मिले,
मां नर्मदा पर की साधना
प्रभु को योग से जोड़ लिया!
वश में किया देह को
आत्म तत्व को साध लिया!

राम भक्ति को जीवन में ठान लिया
ज्ञान वैराग्य का समर्पण कर
प्रभु की सत्य कृपा को पा लिया!
कठिन तपस्या की हिमगिरी जाकर
पंच तत्वों को अपने अधीन कर लिया!
एक मंत्र मुख वाणी से सियाराम का,
जग की विषय वासना से दूर था!
बारह मास रहे मोहन वृत्त धारण करके,
कभी न बटे विश्रांति को!

नाम दिया मिलकर राम भक्तों ने,
शुभ नाम वह सियाराम कहलाया!
संत हृदय से सियाराम कहलाए,
परम धाम में विश्राम मिला!
जो भी आया द्वारे बाबा के,
पूर्ण सबका काम हुआ!
धन्य हुई धरा खरगोन की,
धरा बनी सियाराम की!
(प्रेषक और रचनाकार)
गोविन्द सूचिक अदनासा जिला - हरदा
नर्मदापुरम संभाग मध्यप्रदेश

महम्मद मोकिम ने भक्त को खुली चुनौती दी, सोनिया को पत्र लिखा



मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भूबनेश्वर : कांग्रेस नेता मोकिम ने PCC प्रेसिडेंट भक्त दास के लीडरशिप को खुली चुनौती देने पर सवाल उठाए हैं। मोहम्मद मोकिम ने सोनिया को चिट्ठी लिखकर अपनी नाराजगी जाहिर की है। मोकिम ने कहा, तीन बार लोकसभा चुनाव हारने वाले भक्त को 2025 में लीडरशिप दी गई है। उनकी पर्सनल आइडियोलॉजी हमसे बिल्कुल अलग है। जयप्रकाश के आंदोलन

के दौरान उन्होंने गांधी परिवार की आलोचना की थी। यह चिंता की बात है कि वह और उनके बेटे कोशल आंदोलन का समर्थन कर रहे हैं। उनके नेतृत्व में कांग्रेस नुआपाड़ा उपचुनाव 83,000 वोटों से हारी। नुआपाड़ा उनका संसदीय क्षेत्र होने के बावजूद, उनका प्रदर्शन निराशाजनक है। कार्यकर्ताओं का अपने संसदीय क्षेत्रों पर भरोसा न करना स्वाभाविक है। उनके लिए ओडिशा में कांग्रेस का नेतृत्व करना असंभव है।

इतना ही नहीं, उन्होंने पूर्व PCC अध्यक्ष शरत पटनायक की काबिलियत पर भी सवाल उठाए हैं। शरत के नेतृत्व में, कांग्रेस को 2024 में कम से कम 13% वोट मिले। शरत पटनायक खुद चुनाव में अपनी सीट हार गए। इन दिनों कांग्रेस को फिर से खड़ा होने की जरूरत है। मोकिम ने कहा कि युवा नेतृत्व के साथ-साथ पारदर्शिता और योग्यता के आधार पर नियुक्तियों की जरूरत है।

आईआईटी (आईएसएम)का शताब्दी सप्ताह के समापन समारोह में गौतम अदानी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, देश के जाने माने उद्योगपति और अग्रणी ब्रह्म के वेयरकेन गौतम अदानी ने उन दिवसीय ताकतों को कठघरे में खड़ा किया है, जो भारत की विकास प्राथमिकताओं को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। उन्होंने कहा कि भारत को ऐसे बारी दबावों का डटकर विरोध करना चाहिए और वही करना चाहिए जो देश के दीर्घकालिक हितों में सबसे बेहत आदमी गंजनावार को झारखंड के धनबाद में है। वह धनबाद स्थित आईआईटी आई एस एम के शताब्दी स्थापना वर्ष के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में माने लिये गये थे। उन्होंने समारोह को संबोधित करते हुए कहा-अगर हम अपनी कसबों खूद नहीं करके, तो हमारी आकांक्षाओं को गत समझा जायगा और जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिये अधिकार को वैश्विक प्रयत्न की तरह प्रस्तुत किया। उन्होंने वैश्विक आर्थिक आंदोलन का हवाला देते हुए बताया कि भारत दुनिया के सबसे कम प्रति व्यक्ति का सकल घरेलू उत्पाद करने वाले देशों में शामिल है, जबकि हमने तब समय से पहले 50 प्रतिशत से अधिक नौ-फोसिल ईंधन खनन कर लिये हैं। अदानी ने कहा कि प्रति व्यक्ति जीडीपी का औद्योगिक विकास प्रदर्शन को कमतर दिखाने की कोशिश वैश्विक इस्त्री केमवर्क में नौ-पुनर्निर्माण को उत्साह करती है। अपने संबोधन में उन्होंने आर्थिक स्थिति समझू की कारवाहक कोषाया खदान का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि इसे सही की सबसे विवादात्त पर्यटनगोष्ठी और राजनीतिक लड़ाई, का सामना करना पड़ा, लेकिन यह



परियोजना भारत की ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करने के अर्थ से बनाई गई थी। अदानी ने समूह के बड़े अध्यक्ष ऊर्जा विदेशों का उत्प्रेषण करते हुए बताया कि गुजरात में 30 जी ईयू खनन वाला खादक अर्थ ऊर्जा पार्क इसका प्रमुख उदाहरण है, जिसके कुछ हिस्से पहले से चालू हो चुके हैं। उन्होंने इस समय को भारत का 'दूसरा आजादी का संघर्ष' बताया-इस बार आर्थिक और संसधान संग्राम के लिए। उन्होंने कहा कि मार्गनि, निगरन और सर्व संपादन वाले समय में भारत की अभावों का निर्धारण करेंगे। उनके शब्दों में, लोग अने ही मार्गनि को पुरानी अर्थव्यवस्था करें, लेकिन इसके बिना बड़े अर्थव्यवस्था का निर्माण संभव ही नहीं है।

अदानी ने कहा कि भारत को ऐसे दौर में अग्रणी विकास पथ स्वयं तय करना होगा, जब वैश्विक गठबंधन कमजोर हो रहे हैं और देश अपने-अपने हितों को प्राथमिकता दे रहे हैं। उन्होंने खनन वाला खादक अर्थ ऊर्जा पार्क इसका प्रमुख उदाहरण है, जिसके कुछ हिस्से पहले से चालू हो चुके हैं। उन्होंने इस समय को भारत का 'दूसरा आजादी का संघर्ष' बताया-इस बार आर्थिक और संसधान संग्राम के लिए। उन्होंने कहा कि मार्गनि, निगरन और सर्व संपादन वाले समय में भारत की अभावों का निर्धारण करेंगे। उनके शब्दों में, लोग अने ही मार्गनि को पुरानी अर्थव्यवस्था करें, लेकिन इसके बिना बड़े अर्थव्यवस्था का निर्माण संभव ही नहीं है।

की थी, जो देश की 'मिथी की ताकत' को वैज्ञानिक रूप से समझ सके। यह समझ इस बात को दर्शाती है कि कोई भी राष्ट्र प्राकृतिक संसाधनों की पर्याप्त और उपयोग विरत बिना अपने नहीं बढ़ सकता। अदानी ने कहा हम सबने नहीं केवले करके दिखाते हैं। इस मिथी में छुपा है भारत का आने वाला उजाला जो धरती को पढ़ ले वही है अस्सी रखवाला है। प्रति में छुपे छुपे से आरंभ किया कि बिना उरे सपने देखते, बिना रुके मेहनत करें, बिना रुके आगे बढ़ें और भारत को सर्वोत्तम बनायें। अदानी ने कहा 'कोर के कस्टोडियन' बनने, ताकि एक आर्थिक और आर्थिक विकास भारत के निर्माण में योगदान दे सकें।

सेंट्रल जेल अमृतसर में मनाया गया 'मानव अधिकार दिवस कार्यक्रम'

अमृतसर, 10 दिसंबर (साहित्य बेरी)

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (DLSA) अमृतसर की ओर से विश्व मानव अधिकार दिवस के अवसर पर सेंट्रल जेल, अमृतसर में एक विशेष जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अमरदीप सिंह बैस, सचिव/सिविल जज (सीनियर डिबोजन) ने की। उन्होंने कैदियों को मानव अधिकारों के महत्व, प्रत्येक नागरिक को प्राप्त संवैधानिक सुरक्षा एवं न्याय तक पहुंच सुनिश्चित करने में मुफ्त कानूनी सहायता की अहम भूमिका के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि विश्व मानव अधिकार दिवस गरिमा, समानता और स्वतंत्रता के सार्वभौमिक सिद्धांतों की वैश्विक यादगार है। साथ ही, उन्होंने विशेष रूप से कमजोर एवं हाशिये पर रहने वाले वर्गों के अधिकारों की रक्षा करने की आवश्यकता पर भी बल दिया। श्री बैस ने यह भी स्पष्ट किया कि वास्तविक प्रगति तभी संभव है जब पूरा समाज एकजुट होकर मानव अधिकारों को मजबूत करता है और न्याय सभी के लिए बिना किसी भेदभाव के सुलभ बनता है।

विश्व मानव अधिकार दिवस के उपलक्ष्य में DLSA अमृतसर द्वारा जिलेभर में पाँच अन्य जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। दूसरा सेमिनार/जागरूकता कार्यक्रम श्री अमरदीप सिंह बैस द्वारा माधव विद्या निकेतन सीनियर सेकेंडरी स्कूल, अमृतसर में NGO LAAWA के



सहयोग एवं श्री शरत वशिष्ठ के माध्यम से आयोजित किया गया। इस सेमिनार का मुख्य विषय 'YOUTH AGAINST DRUGS' था, जिसका उद्देश्य युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों, नशे से जुड़े कानूनी परिणामों के बारे में जागरूक करना और उन्हें स्वस्थ एवं नशामुक्त जीवन की ओर प्रेरित करना था। इस दौरान बच्चों को अपने समाज में नशा-विरोधी जागरूकता के राजदूत बनने के लिए भी प्रेरित किया गया।

अन्य कार्यक्रमों में शेडरट होम्स में महिलाओं, बच्चों और बेघर व्यक्तियों के अधिकारों पर सत्र; स्कूलों एवं कॉलेजों में

विधिक साक्षरता, लैंगिक समानता और साइबर सुरक्षा पर जागरूकता कार्यक्रम; तथा एक पुलिस स्टेशन में हिरासत सुरक्षा, कानूनी पुलिसिंग और कोर्टोडियल ह्यूमेन ट्रीटमेंट पर सत्र शामिल थे।

इन सभी गतिविधियों के माध्यम से DLSA अमृतसर ने मानव अधिकारों के प्रचार, विधिक जागरूकता बढ़ाने, नशे जैसी सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन एवं एक ऐसे समाज के निर्माण हेतु अपनी अटूट प्रतिबद्धता को पुनः दोहराया, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा एवं अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित की जा सके।

रांची राजभवन का नाम बिरसा भवन नामित हो: राधाकृष्ण किशोर, संसदीय मंत्री

दुमका राजभवन हो सिदु-कान्हू भवन हो

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड

रांची झारखंड की हेमंत सरकार ने आज एक प्रस्ताव पारित कर कहा कि रांची राजभवन का नाम अब बिरसा भवन तथा दुमका राज भवन का नाम सिदो-कान्हू भवन कहलायेगा। कुछ दिन पहले केंद्र सरकार ने अतः लोग भवन नाम से नामित करने का निर्णय लिया था। संसदीय कार्य मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने बुधवार को विधानसभा में खड़े हुए और प्रस्ताव रख दिया कि रांची का राज भवन अब बिरसा भवन कहलाएगा। मंत्री ने सदन में कहा कि रांची का मुख्य राज भवन का नाम बिरसा भवन होगा, भगवान बिरसा मुंडा के सम्मान में। वहीं दुमका का राज भवन सिदो-कान्हू भवन कहलाएगा, सताल विद्रोह



के नायकों सिदो और कान्हू मुरमू के नाम पर होगा।

मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने कहा कि राज भवन राज्य सरकार की संपत्ति है। संविधान के अनुच्छेद 154 के तहत राज्य की कार्यकारी शक्ति गवर्नर में होती है, इसलिए उनका कार्यालय भी राज्य का हिस्सा है। संपत्ति पर नाम रखने का पूरा अधिकार राज्य सरकार को है। बला दें कि केंद्र सरकार ने 3 दिसंबर को पूरे देश में

सभी राज भवनों का नाम लोक भवन करने का आदेश दिया था। झारखंड ने भी तुरंत इसे लागू कर दिया। लेकिन अब राज्य सरकार ने अपना अलग प्रस्ताव पेश कर दिया है।

रांची का राज भवन 52 एकड़ में फैला है, इसके साथ 10 एकड़ में ऑड्रि हाउस भी है। इसकी नींव 1930 में पड़ी थी और मार्च 1931 में सिर्फ 7 लाख रुपये की लागत से बनकर तैयार हो गया था।

झारखण्ड भवन दिल्ली का मामला उठा शीतकालीन विधानसभा सत्र में

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, झारखंड विधानसभा के शीतकालीन सत्र के चौथे दिन बुधवार को सदन की कार्यवाही प्रश्नकाल से शुरू हुई। इसमें सत्ता पक्ष और विपक्ष ने कई मुद्दों पर सवाल उठाए। झारखंड पर्यटन विकास और निबंधन संशोधन विधेयक हार गए। इन दिनों कांग्रेस को फिर से खड़ा होने की जरूरत है। मोकिम ने कहा कि युवा नेतृत्व के साथ-साथ पारदर्शिता और योग्यता के आधार पर नियुक्तियों की जरूरत है।



कि 5 वर्ष का रजिस्टर मंगाएं और देखें कि वहां कौन-कौन उठता है। हमारे क्षेत्र के कि मंत्रिमंडल निगरानी एवं सचिवालय विभाग ने आदेश जारी किया है, जिसके तहत अब झारखंड भवन में विधायक के संग-संबंधी ही रह सकते हैं। मंत्रिमंडल निगरानी सचिवालय का यह फैसला सही नहीं है। स्पष्ट कर से मांग है

दिल्ली जाती है, लेकिन उनके लिए झारखंड भवन में जगह नहीं है। उन्होंने कहा कि ऊर्जा विभाग के गेस्ट हाउस के लिए पांच लाख रुपये प्रतिवर्ष खर्च होते हैं। दो-दो झारखंड भवन भी वहां हैं, जिसपर जनता की गद्दी कमाई खर्च हो रही है और उन्हें ही ठहरने से वंचित किया जा रहा है। इससे संबंधित प्रतिबंध अविलंब ठहरने की आवश्यकता है और ऊर्जा विभाग के गेस्ट हाउस व दोनों झारखंड भवन में क्षेत्र की जनता को ठहराने की व्यवस्था कराने की जरूरत है। इस पर संसदीय कार्य मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने सदन को आश्चर्य किया कि ऐसा निगरानी विभाग ने कैसे किया, यह देखना पड़ेगा। इस प्रकार की व्यवस्था कैबिनेट की स्वीकृति से ही हो सकता है। वहां क्षेत्र की जनता के ठहरने पर रोक नहीं होनी चाहिए। सरकार इसकी समीक्षा करेगी।

नरेंद्र मोदी डेवलपमेंट मिशन की ऑर्गनाइजेशनल मीटिंग और जालेश्वर ब्रांच ऑफिस का उद्घाटन

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओडिशा

जालेश्वर/भुवनेश्वर: नरेंद्र मोदी डेवलपमेंट मिशन के नए जालेश्वर ब्रांच ऑफिस का उद्घाटन आज दोपहर स्टेट हाईवे 60, जमालपुर बाईपास पर डककम नर्सिंग होम के पास हुआ। ऑफिस का उद्घाटन नरेंद्र मोदी डेवलपमेंट मिशन के स्टेट प्रेसिडेंट डॉ. अब्दुल गनी हुसैन ने किया। बालासोर जिला महासचिव शिशिर कुमार साहबी की अध्यक्षता में हुई बैठक में मुख्य मिशन के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. अब्दुल गनी हुसैन, राज्य महिला मोर्चा अध्यक्ष और पूर्व विधायक प्रमिला गिरी, राज्य किसान मोर्चा अध्यक्ष तुषार कांति दास, राज्य अल्पसंख्यक अध्यक्ष शोख अब्दुल हकीम, राज्य महासचिव तपस महापात्र, उत्तर ओडिशा क्षेत्रीय अध्यक्ष ईजीनियर रत्नाकर राय, बालासोर जिला अध्यक्ष पंकज परिदा, कार्यकारी अध्यक्ष एसके नजीमुद्दीन, संपादक डॉ. अशोक परिदा, मयूरभंज जिला जोन 2 अध्यक्ष सुकुमार राणा, जोन 1 महिला आंदोलन की नेता सुमित्रा बलवंतराय, जालेश्वर ब्लॉक कार्यकारी अध्यक्ष सुशील प्रधान, जिला उपाध्यक्ष बलराम बेहरा, पूर्व सरपंच मधुसूदन दत्त, जालेश्वर नगरपालिका अध्यक्ष विजय परिदा, बस्ता ब्लॉक रघुनाथ पुर पंचायत नेता जगन्नाथ जेना और विभिन्न पंचायतों के नेता उपस्थित थे और विभिन्न विकास योजनाओं पर चर्चा की। उन्होंने चर्चा की कि कैसे भाजपा पार्टियों आगामी पंचायत और नगरपालिका चुनावों में जिला पार्षद, समिति सदस्य, सरपंच और पार्षदों को भेजकर जीत सकती है। तपस्विनी दास और अनापूर्णा महापात्र ने पुष्पगुच्छ और उत्तरीय से मेहमानों का स्वागत किया। आखिर में, सीनियर BJP लीडर नबा किशोर दास ने सभी को धन्यवाद दिया।

